ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 5 अंक : 3 फरवरी-मार्च 2015 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्री पुष्पित पारासर
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

तिजोरी/धन रखने का शुभ स्थान एंव खास उपाय	डा. महेश पारासर	2
शिवलिंग पूजन से ग्रह कष्टो का निवारण	डा. रचना के भारद्वाज	3
महाशिवरात्रि व्रत	डा. शोनू मेहरोत्रा	4
गायत्री में 24 अक्षर क्यो? और छ देषिया	पं. चन्द्र शेखर तिवारी	5
युवा शक्ति का आवाहन होली पर रहेगा कलर	डा. अरविन्द मिश्र	6
थैरेपी को जोर नबरात्रि पर क्या लगायें	पवन कुमार मेहरोत्रा	7
माता को भोग जानिए राहु से प्रभावित (ग्रस्त)	पुष्पित पारासर	8
मनुष्य के लक्षण.....	पं. दया नन्द शास्त्री	9
क्या है बंधन	पं. अजय दत्ता	10
सूरदास जी की दिव्य दृष्टिः वि.स. 3000के बाद सत्ययुग का प्रवेश होगा	सुरेश अग्रवाल	10
मनोविज्ञान	मोहिनी शर्मा	11
हम अमरूद क्यो खाये	डा. यू. के. शर्मा	11
गायत्री में छ देविया 24 अक्षर क्यो?	पं चन्द्र शेखर तिवारी	12
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	13–14
उतावलापन	विजय शर्मा	15
पूजा – सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रकाशित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN/2010/44791

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

धन रखने का शुभ स्थान एवं खास उपाय

कई बार हम बहुत मेहनत करते है, हमे मौके भी अच्छे मिलते है लेकिन पर्याप्त सफलता नहीं मिल पाती है। धन आता तो है लेकिन टिकता बिलकुल भी नहीं है। हो सकता है हमारे घर, व्यापारिक स्थल की तिजोरी रखने के स्थान में दोष हो।

जी हाँ, यह सही भी हो सकता है। मात्र इसी कारण से हमें आर्थिक दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा हो। हर घर में तिजोरी अथवा धन रखने का एक खास स्थान या अलमारी आदि अवश्य ही होता है। अगर वह तिजोरी अथवा अलमारी सही जगह हो, कुछ छोटी छोटी बातों का ध्यान रखा जाय, तो उस घर में निश्चित ही धन दिन दुनी–रात चौगुनी गति से बढता रहता है। निवास स्थान के उत्तरी हिस्से में कुबेर का स्थान होता है। इसी कारण तिजोरी रखने का कमरा भी उत्तरी हिस्से में रखना ही श्रेष्ठ है। यदि अलमारी में धन रखना हो तो उसके मध्य भाग में या ऊपर के भाग में तिजोरी बनाना उचित रहता है।

ईशान में स्थापित तिजोरी से धन का नाश होता है। आग्नेय में रखी तिजोरी से अनावश्यक खर्च होता है। नैऋत्य कोने की तिजोरी से आकस्मिक खर्च भी हो जाता है। या धन के चोरी होने के सम्भावना रहती है। वायव्य दिशा में रखी तिजोरी में तो पैसा टिक ही नही सकता है।तिजोरी के कमरे में तिजोरी, दक्षिण दीवार में बिल्कुल मिलाकर नहीं वरन थोडा सा आगे रखनी चाहिए। लेकिन यह आग्नेय कोण को छोडकर ही रखनी चाहिए। उसका पीछे का हिस्सा दक्षिण की दिवार की तरफ होना चाहिए एंव सामने का दरवाजा उत्तर दिशा की तरफ खुलना चाहिए।

तिजोरी के कमरे में सिर्फ एक ही प्रवेश द्वार होना चाहिए। यह प्रवेश द्वार उत्तर या पूर्व की तरफ ही होना चाहिए। इस कमरे में आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, दक्षिण दिशा में तो कभी भी दरवाजा नही होना चाहिए अथवा उसे बंद कर देना चाहिए। उत्तर की तरफ के दरवाजे के ठीक सामने तिजोरी नही रखनी चाहिए। इसे कुछ हटाकर रखना ही शुभ है। तिजोरी का कमरा चौकोर या आयताकार होना अच्छा रहता है। इसकी उँचाई भी अन्य कमरों से कम नहीं होनी चाहिए। इस कमरे में दहलीज होना शुभ होता है।

तिजोरी के सामने भगवान की कोई तस्वीर न लगायें। हाँ, पूर्व या पश्चिम की दीवार पर चाहे तो तस्वीर टांग सकते है।तिजोरी के नीचे पाये अवश्य ही होने चाहिए। बिना पैर की तिजोरी अलमारी में रखा पैसा टिकता नहीं है।कमरे में तिजोरी असमतल धरातल पर नहीं सपाट भाग पर ही रखी होनी चाहिए। ध्यान रहे वह किसी भी दिशा में झुकी न हो। यदि ऐसा हो तो उसे हिलने से बचाने के लिए ईट पत्थर की जगह लकडी को सहारे के लिए लगाना चाहिए। तिजोरी के अंदर या ऊपर कुछ भी अनावश्यक वस्तुएं जैसे कपडे, बर्तन, कापी, किताबे, फाइलें, पुराने अखबार, लोहे की कोई भी वस्तुएं कुछ भी कतई नही रखना चाहिए। यदि तिजोरी के ऊपर कोई बोझ रखा हो तो उसे तुरंत हटा ले।तिजोरी के कमरे का रंग हल्का विशेषकर पीला रंग रखना बहुत शुभ होता है। ध्यान रहे इस कमरे का रंग काला लाल या नीला नही होना चाहिए। तिजोरी रखने के लिए सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार का दिन उत्तम रहता है। तिजोरी रखने के लिए श्रवण धनिष्ठा स्वाति पुनवसु शतभिषा उत्तरा रोहिणी नक्षत्र शुभ माने जाते है। इन दिनों में तिजोरी अथवा अलमारी मे धन रखना आरम्भ करना उचित रहता है। इससे धन की लगातार बृद्धि होती है। तिजोरी में लाल रंग का कपडा बिछाना शुभ रहता है। इसे रोज सुबह शाम धूप, अगरबत्ती अवश्य दिखानी चाहिए, सभी शुभ मुहूर्त विशेषकर हर माह के पुष्य नक्षत्र, नवरात्रि, धनतेरस, दीपावली आदि में धन स्थान की पूजा निश्चित रूप से करनी चाहिए। मार्गशीर्ष महीने में प्रत्येक बृहस्पतिवार और शुक्रवार को भी तिजोरी की पूजा जरूर करनी चाहिए।तिजोरी में शुभ यंत्र जैसे श्री यंत्र, व्यापार वृद्धि यंत्र, महालक्ष्मी यंत्र, वीसा यंत्र

या हत्था जोडी की लाल कपडे अथवा चाँदी की प्लेट में स्थापना करने से शुभता बनी रहती है। इन्हे रोज धूप अगरबत्ती अवश्य ही दिखाते रहे।जहाँ तक हो सके तिजोरी को बिना नहाए अथवा गदें हाथो से बिल्कुल भी ना खोले। अगर संभव हो तो उसे जूते चप्पल पहन कर भी ना खोले।तिजोरी के अंदर के दरवाजे पर शीशा जरूर लगाएं जिसमें तिजोरी खोलते समय अंदर के धन का प्रतिबिम्ब भी नजर आता रहे, इससे वृद्धि होती है। तिजोरी किसी भी बीम के नीचे नहीं रखनी चाहिए। तिजोरी के किसी भी तरफ मकडी का जाला नहीं होना चाहिए।

यह सब ऐसे छोटे छोटे किन्तु बहुत ही आसान से उपाय है जिन्हे करके हम अपने घर में स्थाई लक्ष्मी का वास करा सकते है।

महेश पारासर

अमृत वचन

शारीरिक आवश्यकताएँ पूरी करने मात्र से मानवता विकसित नहीं हो सकती।

अच्छाइयों को जानना अच्छी बात है, पर अच्छा होना उससे बड़ी बात है।

कालसर्प योग निवारण पूजन

दिनांक 17 फरवरी 2015 महाशिवरात्रि के पर्व पर भविष्य दर्शन एवं श्री बाबा रमण गिरि सेवा धाम द्वारा कालसर्प योग शान्ति हेतु पूजन एवं यज्ञ का आयोजन श्री नागमाता मन्दिर, वायु विहार रोड़, बोदला से बिचपुरी रोड़ पर किया जा रहा है। जो भी व्यक्ति कालसर्प योग की शान्ति कराना चाहते है वह अपना नाम पंजीकृत नीचे लिखे हुये फोन न. पर फोन कर के अवश्य करा लें।

फोन न. 9719666777, 9719005262

पाठकों के पत्र

परम् श्रद्धेय गुरू जी,

मैं आपकी पत्रिका भविष्य निर्णय का नियमित पाठक हूँ। पत्रिका का प्रत्येक अंक अनमोल है। सभी लेख उत्तम व नाम वर्धक होते है। आशा है कि आने वाले दिनो में पत्रिका और अधिक सफलता के सोपान करेगी।

माधव गुप्ता, नई दिल्ली

आदरणीय पारासर जी,

विगत दिनों आपसे व्यक्तिगत भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपके व्यवहार ने बहुत प्रभावित किया। आपके आदेशानुसार मंत्र का जाप करने से मेरा निभागीय विवाद का निरटारा हो गया है। मेरी कमी हुई तनख्याह भी मुझे मिल गई है। मैं आपका सदैव ऋणी रहूँगा।

राकेश सिंह, इटावा

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न 1. मेरे पति का व्यापार ठीक नहीं चल रहा है। उनकी कुण्डली भेज रही हूँ। उचित मार्गदर्शन करें।

शशी माथुर, मथुरा

उत्तर– उनकी शनि की साढेसाती प्रारम्भ हो गई है। उनसे शनि स्त्रोक्त का पाठ करवायें तथा शनि मंत्र का जाप करवायें। पन्ना रत्न धारण करवायें। अगस्त 2015 के व्यापार ठीक चलने लगेगा।

प्रश्न 2. मेरे बेटे का पढने में मन नहीं लगता। उपाय बताये। कुण्डली संलग्न है।

फूल चंद गोयल, आगरा

उत्तर– राहु की महादशा चल रही है। बेटे को सरस्वती यंत्र का लाकेट धारण करवायें। पक्षियों को दाना चुगायें। लाभ मिलेगा।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– 1. कृपया बताने की कृपा करें कि हम अपने अस्पताल में अल्ट्रासाउण्ड की मशीन कहाँ स्थापित करें।

डा. आर के सिंह, गोडा

समाधान– वास्तु के हिसाव से एक्सरे, अल्ट्रासाउण्ड, सीटी स्केन की मशीन को पूर्व–दक्षिण दिशा अर्थात् आग्नेय कोण में स्थापित करना सर्वश्रेष्ठ रहता है।

समस्या– 2. हमारें घर का वास्तु वताने की कृपा करें। नक्शा संग्लन है।

मोहन प्रकाश, नई दिल्ली

समाधान– आपके घर में उत्तर दिशा में सीढिया है। सीढीयों के नीचे शौचालय है। यह वास्तुदोष है। उत्तर दिशा में सीढियों के होने से परिवार का विकास रूकता है। सीढियों के नीचे शौचालय होने से बहिन,बेटी को कष्ट मिलता है। सीढियों को दक्षिण की तरफ ले जाये तथा शौचालय को वायव्य कोण में इससे लाभ मिलेगा।

पं. अजय दत्ता
मो. 9319221203

शिवलिंग पूजन से ग्रह कष्टों का निवारण

डा. रचना के भारद्वाज (पी.एचडी)
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

जन्म पत्री में ग्रह अपनी दशाओं, अंतर्दशाओं के आधार पर परेशान करते हैं इसके लिये शिव रात्रि के दिन शिव लिंग पूजन अपने ग्रहों के आधार पर करें तो कष्टों से निवृति अवश्य मिल सकती है। यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से संबंधित कष्ट है तो शिव लिंग पूजन, आक के पुष्पों पत्तों एंव बिल्व पत्रों से करने से 3 जन्मों के पापों का नाश हो जाता है।

जन्मपत्रिका में मंगल से संबंधित बीमारियां (जैसे रक्त संबंधित रोग) हों, तो गिलोय जडी बूटी के रस से अभिषेक करें। यदि जन्मपत्रिका में बुध से संबंधित बीमारियां (चर्म रोग, गुर्दे की बीमारी आदि) है, तो विदारा जडी बूटी के रस से अभिषेक करें यदि जन्मपत्रिका में बृहस्पति से संबंधित बीमारियां (जैसे चर्बी, अंतों, लीवर की बीमारी आदि) है तो शिंव लिंग पर हल्दी मिश्रित दूध चढायें। यदि जन्मपत्रिका में शुक्र से संबंधित (वीर्य, मल मूत्र, शारीरिक शक्ति) बीमारियां है तो पंचामृत, शहद घृत से शिवलिंग का अभिषेक करें। यदि कुंडली में शनि से संबंधित (मांसपेशियों का दर्द, जोडों का दर्द, वायु रोग, लाइलाज रोग) बीमारियां है तो गन्ने के रस और छाछ से शिवलिंग का अभिषेक करे। राहु केतु से संबंधित बीमारियों (सिर चकराना, मानसिक परेशानी अधरंग आदि) के लिए उपर्युक्त सभी वस्तुओं के साथ मृत संजीवनी का सवा लाख जाप करा कर भांग–धतूरे से शिव लिंग का अभिषेक करें।

समस्त कष्टों के निवारणार्थ अभिषेकः– यदि पति पत्नी में प्रेम न हो,ग्रह क्लेश हो, विवाह में रूकावट आ रही है तो मक्खन मिश्री मिला कर बिल्व पत्र पर रख कर 108 बिल्व पत्र चढाएं।

यदि धन की इच्छा हो तो खीर से अभिषेक करें। यदि सुख–समृद्धि की इच्छा हो तो भांग को घोट कर अभिषेक करें। मारकेश या मारक दशा चल रही हो, तो मृत संजीवनी, या महामृत्युंजय का सवा लाख मंत्रो का जाप करवाएं और अभिषेक करवांए। **कार्ल सर्प के लिए भी शिव जी की पूजा विशेष फलदायी है।** शत्रु विनाश के लिए सरसों के तेल का अभिषेक कराएं। अगर पुत्र की प्राप्ति करनी है, तो मक्खन से शिव लिंग का अभिषेक कराएं। धन प्राप्ति हेतु स्फटिक के शिव लिंग का अभिषेक कराएं। धन प्राप्ति हेतु स्फटिक के शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें। आयु वृद्धि के लिए गौ घृत से अभिषेक करें। ऋद्धि सिद्धि प्राप्ति के लिए पारद शिव लिंग का पूजन और अभिषेक करें। मकान, भूमि, भवन, वाहन आदि प्राप्ति के लिए शहद से अभिषेक करें। सर्वार्थ मनोरथ के लिए 108 बिल्व पत्र पर श्री राम लिख कर 108 दिन चढाएं। कलियुग में पार्थिव शिवलिंग अर्थात् बांबी, गंगा, तालाब, वेश्या के घर और घुड साल की मिट्टी, मक्खन मिस्री मिला कर बनाएं और सभी प्रकार की मनोकामना के लिए इसका अभिषेक करें। लेकिन सांय काल सभी शिव लिंगो को जल में प्रवाहित कर दें।

फूलों से बनाये गये शिवलिंग के पूजन से भू संपति प्राप्त होती है। जौ, गेहूं, चावल, तीनों, का आटा समान भाग मिला कर जो शिव लिंग बनाया जाता है, उसकी पूजा स्वास्थ्य, श्री और संतान देती है। मिस्री से बनाये हुए शिव लिंग की पूजा रोग से छुटकारा दिलाती है। सुख–शांति की प्राप्ति के लिए चीनी की चाशनी से बने शिवलिंग का पूजन होता है।बांस के अंकुर को शिवलिंग के समान काट कर पूजन करने से वंश वृद्धि होती है। दही को कपड़े में बाध ा कर निचोड़ देने के पश्चात् उससे जो शिवलिंग बनता है उसका पूजन लक्ष्मी और सुख प्रदान करने वाला होता है। गुड़ में अन्न चिपका कर शिवलिंग बना कर पूजा करने से कृषि उत्पादन अधिक होता है। किसी भी फल को शिवलिंग के समीप रख कर उसका रूद्राभिषेक मुक्तिप्रदाता होता है दूर्वा को शिव लिंगाकार गूंथ कर उसकी पूजा करने से अकाल मृत्यु का भय दूर होता है। कपूर से बने शिवलिंग का पूजन भक्ति और मुक्ति देता है मोती के शिवलिंग का पूजन स्त्री की भाग्य वृद्धि करता है। लोहे से बने शिवलिंग का पूजन सिद्धि देता है। स्वर्ण निर्मित शिवलिंग का रूद्रा भिषेक समृद्धि का वर्धन करता है। चांदी के शिवलिंग का रूद्राभिषेक धन धान्य बढाता है। पीतल के शिवलिंग का रूद्राभिषेक दरिद्रता का निवारण करता है। लहसुनिया के शिवलिंग का रूद्राभिषेक शत्रुओं का नाश करता है और विजयदाता होता है। पारद से बने शिवलिंग का पूजन सर्वकामनाप्रद मोक्षप्रद है।

❋❋❋

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
भविष्य दर्शन®
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
CONSULTATION ON PRIOR APPOINTMENT ONLY : PH: 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2858686
❋❋❋

महाशिवरात्रि व्रत

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

शिव का शाब्दिक अर्थ कल्याणकारी होता है। इस दृष्टि से महाशिवरात्रि व्रत का अर्थ हुआ कल्याणकारी रात्रि। यह रात्रि महासिद्धि होती है। इस समय में किये गये दान पुण्य, शिवलिंग की पूजा स्थापना एंव अभिषेक, हवन का विशेष फल प्राप्त होता है।

सृष्टि के आरम्भ में इसी दिन मध्य रात्रि को भगवान शिव का ब्रहया की भौहों से प्ररूप में अवतरण हुआ था। प्रलय की बेला में इसी दिन प्रवेश के समय तांडव करते हुए भगवान शिव ने ब्रह्माण्ड का अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से समाप्त कर दिया था। इसलिए इसे महाशिवरात्रि अथवा कालरात्रि कहा जाता है। महाशिवरात्रि शिव के लिंग रूप में उद्भव का दिन भी माना जाता है। यूं भी भगवान शिव संहार शक्ति और तमोगुण के अधिष्ठाता माने जाते है। इसलिए रात्रि से उनका स्नेह होना स्वाभाविक ही कहा जायेगा। यही कारण है कि इनकी आराधना न केवल रात्रि में अपितु सदैव प्रदोष काल में सूर्यास्त और रात्रि की सन्धि ा वेला में करने का शास्त्र सम्मत विधान है। महाशिवरात्रि का व्रत भगवान शिव की पूजा आराधना के निमित ही बनाया गया है। इस व्रत को भगवान श्री राम राक्षस राज रावण, दक्षकन्या सती, हिमालय कन्या पार्वती और विष्णुपत्नी लक्ष्मी ने भी किया है। इससे सैकडों गुना अधिक पुण्य प्राप्त होता है। महाशिवरात्रि को गंगास्नान का बड़ा महात्म्य बताया गया है। शिवाजी की पूजा में बेलपत्र को चढ़ाना विशेष महत्व रखता है। ऐसा बेलपत्र जिसमें तीन या पांच पत्ते एक में हो तथा स्वच्छ हो।

भक्त चढाये गये बेल पत्र की संख्या के बराबर युगों तक कैलाशधाम में सुखपूर्वक वास करता है। वह श्रेष्ठ योनि में जन्म लेकर भगवान शिव का परम भक्त होता है। पूजा में केवल तीन पत्तिया या पांच पत्तियों वाले अखंडित बेलपत्र ही चढाने का विधान शास्त्र सम्मत है। जो मन वचन कर्म से श्रद्धा और सामर्थ्य के साथ भगवान शिव को अर्पित किया गया हो। शास्त्रों के अनुसार बेलपत्र की तीन पत्तियों को शिव के त्रिनेत्र का प्रतीक माना गया है। स्मरण रहे कि शिवलिंग पर चढाये गये पुष्प फल दूध आदि के नैवेध को ग्रहण नहीं करने का विध ाान शास्त्रों में वर्णित है। भगवान शिव की मूर्ति के पास शालिग्राम की मूर्ति रखना अनिवार्य है। यदि शिव की मूर्ति के पास शालिग्राम हो तो नैवेद्य खाने का दोष नहीं लगता है।

शिव को प्रिय है रूद्राभिषेक

महाशिव रात्रि पर्व है भोले भंडारी की पूजा आराधना का। शिवजी को पूजा में सबसे प्रिय है रूद्राभिषेक इसके द्वारा शिवाजी अति शीघ्र प्रसन्न हो जाते है अगर हम अपने कल्याण के लिये भगवान सदाशिव की निष्काम भाव से पूजा करें तो भगवान शिव हमें अनन्त काल तक आर्शीवाद देते है।

शास्त्रों में अलग–अलग इच्छाओं के लिये रूद्राभिषेक के निमित वस्तुये बताई गई है जिन्हे यहां प्रस्तुत कर रहे है

1. धन प्राप्ति के लिये शहद व गाय के शुद्ध देशी घी से अभिषेक करें।
2. मोक्ष प्राप्ति के लिये तीर्थ स्थान के जल से अभिषेक करें।
3. पुत्र प्राप्ति की इच्छा हेतु कच्चे दूध से अभिषेक करें।
4. लक्ष्मी प्राप्ति के लिये गन्ने के रस से अभिषेक करें।
5. जल की धारा भगवान शिव को अत्यन्त प्रिय है अतः ज्वर आदि के कोष को शान्त करने के लिये जल की धारा से अभिषेक करें।
6. बुद्धि की जडता को दूर करने के लिये शक्कर मिले दूध से अभिषेक करना चाहिये। रोज करने से बुद्धि श्रेष्ठ होती है।
7. पुत्र प्राप्ति हेतु जल में शक्कर मिलाकर अभिषेक करे।
8. शत्रुओं की शान्ति एक हेतु सरसों के तेल से अभिषेक करें।
9. कामना पूर्ति हेतु केवल दूध की धार से अभिषेक करें।
10. पशु प्राप्ति हेतु दही से अभिषेक करें।
11. पापों की मुक्ति के लिये श्हद से अभिषेक करें।
12. जो स्त्रियां संतान सुख से वंचित है वे गाय के दूध से अभिषेक करें।
13. आजीवन आरोग्य रहने के लिये देसी घी से अभिषेक करें।
14. दीर्घायु के लिये गाये के दूध से अभिषेक करें।

यदि किसी की जन्म कुण्डली में मारकेश, चल रहा है या जिन जातकों का स्वस्थ्य हमेशा से खराब रहता है उन्हे महाशिवरात्रि के पर्व पर महामृत्युंजय यंत्र की स्थापना घर पर करनी चाहिये व महामृत्युंजय यंत्र गले में धारण करना चाहियें। इसके अतिरिक्त इस रात्रि हवन करना बहुत शुभ होता है। इसके लिये हवन साम्रगी में काले तिल, चावल जौ शक्कर व उसी अनुपात में घी मिलाकर हवन करने से कई गुना शुभ फल की प्राप्ति होती है।

❋❋❋

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

संत रामकृष्ण परमहंस जी की जयंती पर विशेष लेख
संवेदनशील युवा शक्ति ही राष्ट्र की उर्जा शक्ति है

(20.02.2015)

डॉ. अरविन्द मिश्र
ज्योतिष भूषण, वास्तुशास्त्राचार्य

उठो साहसी बनों, वीर्यवान हो, सब आवश्यक उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर लों। यह याद रखों कि तुम स्वंय अपने भाग्य के निर्माता हो। तुम जो कुछ बल या सहायता चाहो, वह सब कुछ तुम्हारे भीतर विद्यमान है। वीरों यह विश्वास रखों कि तुम्ही सब कुछ हो, महान कार्य करने के लिए इस घरती पर आए हो। गीदड घुडकियों से भयभीत मत हो जाना। चाहे वज्र भी गिरे तो भी निडर होकर खड़े हो जाना और कार्य में लग जाना।

यह हुंकार है युवा सम्राट, युवा सन्यासी स्वामी विवेकानन्द की साथियों स्वामी जी का उपरोक्त सन्देश भले ही आज से सौ से भी अधिक वर्ष पुराना हो हों लेकिन आज भी वह उतना ही प्रासंगिक है जितना सौ साल पहले था। युवा शब्द के उच्चारण से ही हमारे सामने एक ऐसे व्यक्ति का चेहरा उभरता है जिसके तन, मन में ओजस, तेजस एंव वर्चस्व का वलय दिखाई पड़ता है। फलस्वरूप चेहरा प्रकाश मय, मन, प्रफुल्लित, तन बलिष्ठ एंव चिंतन सकारात्मक लक्षय हिमालय के शिखर को छूने का अदम्य साहस से भरा हुआ पुरूषार्थ विद्यमान नजर आता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि हारे मन और थके तन से कोई युवा नहीं हो सकता चाहे उसकी उम्र कुछ भी क्यो न हो उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है। कि जो युवा है उसके लिए संसार का कोई भी कार्य असम्भव नहीं है। चाहे परिस्थितियाँ विपरीत ही क्यों न हो, युवा यदि ठान ले तो रेगिस्तान में भी पानी पैदा कर सकता है। यह बाते मात्र अलंकारिक नहीं है यह यथार्थ है। इतिहास के पन्नों में ऐसी घटनाएँ मौजूद है जहाँ युवा शक्ति ने एक नही अनेकों बार जन समूह को रास्ता दिखलाया है और असम्भव लगने वाले कार्य को सम्भव कर दिखाया है। हम बातें कर रहें है संसार में आज तक हुई क्रांति की क्रांति चाहे राजनैतिक हो या आर्थिक, सामाजिक हो या आध्यात्मिक सभी क्रांतियो की बागडोर युवा शक्ति के हाथों में ही थी। यह प्रकृति का वरदान ही है कि युवाओं में यदि जोश के साथ होश आ जाए तो उसके सामने कोई टिक नहीं सकता। गड़ बडी वही होती है जब हमारे युवा साथियों में जोश तो रहता है लेकिन होश की कमी भी वजय से मार्ग भटक जाते है और कुछ युवा साथियों के व्यवहार एवं उनके गलत कार्यों की वजह से पूरा युवा समुदाय को बदनामी झेलनी पडती है।

साथियों आज हम जिस दौर से गुजर रहे है। यह देश और युवाओं के लिए स्वर्णिम युग है। वो इसलिए कि देश में इस समय लगभग 60 प्रतिशत आबादी युवा है जो आने वाले समय में देश की पूजा की दशा एंव दिशा के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहे है। ऐसे महत्वपूर्ण एवं दुर्लभक्षण में आवश्यकता है वर्तमान पीढी को सशक्त एंव समर्थ बनाने की। समर्थ एंव सशक्त बनाने की प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण कार्य है उनके आत्मबल, मनोबल को मजबूत बनाना ऊँचा का उठाना। विजय इसी सद्गुण के आधार पर मिलेगी और आत्मबल को ऊँचा उठाने के लिए चाहिए आध्यात्मिक चिन्तन अर्थात सकारात्मक सोच। इसी चिन्तन को आधार बनाकर गायत्री परिवार द्वारा संचालित विश्व का एक मात्र अनूठा विश्वविद्यालय देव संस्कृति विश्वविद्यालय शक्ति कुंज हरिद्वार में स्थापित है जहाँ भारतीय संस्कृति को आधार बनाकर नालन्दा एंव तक्षशिला के समान राष्ट्रीय चिन्तन से ओत प्रोत युवाओं की फौज खडी की जा रही है। राष्ट्र के लिए यह शुभ लक्षण है कि इस विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु न सिर्फ गायत्री परिवार से जुड़े हुये युवा रूचि दिखा रहे है बल्कि अन्य क्षेत्र के युवा भी बड़ी संख्या में प्रवेश लेकर देव संस्कृति के प्रति समर्पित हो रहे है। ये युवा विश्वविद्यालय से निकलकर देश के विभिन्न क्षेत्रों में युवाओं के बीच पहुँचकर उन्हे राष्ट्रीय कर्तव्य के प्रति जाग्रत कर रहें है। कहावत है कि लोहा लोहे को काटता है। हमउम्र की बात को व्यक्ति अधिक गहराई से सुनता है इसी लिये आज यदि युवा पीढी को दिशा देना है तो सुलझे हुए युवा ही दे सकते है। गायत्री परिवार के प्रमुख एंव युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत श्रदेय डा. प्रणव पण्डया जी कहते है कि विगत में हुई सभी आन्दोलनों का सूत्रधार युवा ही था तो क्यो न आज एक आन्दोलन युवाओं के लिए ही किया जाए।

युवा आन्दोलन के चार सूत्र है।

स्वस्थ युवा–सशक्त राष्ट्र **शालीन युवा**– श्रेष्ठ राष्ट्र
स्वावलम्बी युवा–सम्पन्न राष्ट्र **सेवाभावी युवा**–सुखी राष्ट्र

स्वस्थ युवा अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखना। सुबह उठना योग व्यायाम करना, खान पान को नियमित एंव समय पर करना। व्यक्ति का सवसे अनमोल धरोहर है उसका स्वास्थ्य। इसके प्रति हमेशा सजग रहना चाहिए। देर रात तक जागना एंव सुबह देर तक सोते रहना स्वास्थ्य के लिए घातक है । जब युवा स्वस्थ्य रहेगा तभी वह वलिष्ठ होगा ताकतवर बनेगा एंव राष्ट्र सशक्त होगा।

शालीन युवा– आपका सुडौल, सुन्दर, मजबूत, शरीर किसी को सताने के लिए नहीं है। ताकत का उपयोग आप किसी की सुरक्षा के लिए करें। समाज के नवनिर्माण में करें, तब हमारा राष्ट्र श्रेष्ठ राष्ट्रबन सकेगा।

स्वावलम्बी युवा– छोटे मोटे कार्यो के माध्यम से अपने अन्दर श्रम करने की प्रवृति को जाग्रत करना ही स्वावलम्बन है। मनुष्य की तीन भूलभूत आवश्कताएँ है रोटी, कपड़ा और मकान। इसकी प्राप्ति के लिए युवा को स्वावलम्बी बनना आवश्यक है पर विडम्बना है कि अनपढ श्रम कर के अर्थोपार्जन कर लेता है परन्तु एक पढा लिखा युवक शिश्रित बेरोजगार रहता है क्योकि वो श्रम करना नहीं चाहता है किसी महा पुरूष ने ठीक ही कहा है कि युवाओं को रोजगार के अवसर तलाशने के बजाय जीवन के मकसद तलाशना चाहिए। यदि मकसद के हिसाब से श्रम करें तो सफलता निश्चित है। जो युवा है जिस स्थिति में है वहीं से स्वावलम्बी बन सकता है और आगे बढ़ सकता है।

शेष पेज 17 पर.....

होली पर रहेगा कलर थैरेपी का जोर

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

देवर जी मेरे साथ होली खेलो तो केवल पीला रंग लगाना। केवल वही रंग मेरी राशि को सूट करता है। काला लाल या नीला रंग लगाया तो सच्ची कह रही हूँ मैं होली नहीं खेलूगी। क्यो परेशान हो ना। सोच रहे होगें कि आपकी भाभी भी आपके सामने ऐसी ही कोई फरमाइश न कर दे। अगर ऐसा हुआ तो उन्हें काले रंग से भूत कैसे बना पायेंगें। फिर क्या होगा आपकी प्लानिंग का। अगर ऐसा है तो आपकी चिंता जायज है क्योकि सिर्फ तैयारी भाभी ही नहीं दोस्त और आपकी स्वीट वाइफ भी आगे से आपको सिर्फ एक ही रंग लगाने के लिए बाध्य कर सकती है। ऐसा होगा कलर थेरेपी के चलते। इस होली पर कलर थैरेपी का जोर रहने वाला है।

वास्तु और ज्योतिष के बढ़ते क्रेज को लेकर लोंग होली भी उन रंगो से खेलना चाहते हैं जो कि उनकी राशि को सूट करते है। लोग उन्ही खास रंगो से जीवन को रंगीन बनाना चाहते है। रंगों में दुख हरने की शक्ति होती है। जिन रंगों की हमारे जीवन में कमी होती है। होली के रंग उसी कमी को पूरा कर जीवन को सक्रिय बना देते है। यही कारण है इन दिनों लोगो में कलर थेरेपी का क्रेज बढ़ रहा हैं। फिर चाहें होली का त्यौहार ही क्यों न हो। अपनी राशि को सूट करते हुए रंगों से होली खेलने के अलावा होली वाले दिन उस रंग के वस्त्र भी पहन सकते है एंव रंग विशेष की मिठाई भी खा सकते है। निश्चित रूप से अपनी राशि को सूट करते हुए रंगो से होली खेलना लाभप्रद साबित होता है। दूसरा व्यक्ति हमारे ऊपर किस रंग का गुलाल या रंग डालेगा यह तो पता नहीं होता है। लेकिन हम अपने प्रयोग के लिए अपने अनुसार रंग खरीद सकते है। वह रंग जब हम दूसरों को लगाते है तो यह हमारे हाथों में भी लगता है। अनेक बार हमारा ही रंग या गुलाल अन्य व्यक्ति भी हमारे ऊपर लगा देते है जो रंग व्यक्ति को सूट करते है। अगर वह उसके आस पास रहे तो प्रफुल्लित महसूस करता है। ये रंग व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव डालते है।

व्यक्ति विशेष की राशि के अनुसार सूट करने वाले रंग

मेष, वृश्चिक– लाल, नांरगी

वृष, तुला– सफेद, सिलवर

मिथुन, कन्या– हरा, तोतई हरा **कर्क**– दूधिया, सफेद

सिंह– मैरून **धनु, मीन**– पीला

मकर, कुंभ– नीला, काला

गहरा लाल और नीला रंग रफ्तार में तेजी लाता है। अतः जिन लोगो को सुस्ती का अहसास होता है वे इन रंगो से होली खेले। ये रंग पाचन क्रिया बढ़ाने व लो ब्लड प्रेशर में भी सहायक है।

घर के हिसाब से भी होली खेलें : जिन लोगों के घर दक्षिणमुखी है वें लाल रंग जिनका घर पश्चिम मुखी है वे नीला, जिनका घर उत्तर मुखी है वे हरा व जिनका घर पूर्वमुखी है वे पीले रंग से होली खेले।

साल भर बचे रहेगें कुदृष्टि से : यदि साल भर स्वंय को फिट और अपने परिवार को बुरी नजर से बचाना चाहते है तो होली वाले दिन पूजा एंव सिद्ध किया हुआ नारियल अपने परिवार व मकान के ऊपर से सात बार उतार कर होलिका दहन के बक्त उसमें डाले दें। इससे बुरी नचर से बचा जा सकता है। तो अगर इस होली पर आपकी भाभी साली, पत्नि या मित्र आपको एक विशेष रंग लगाने के लिये वाध्य करें तो आश्चर्य न करियेगा। ऐसा होगा कलर थेरेपी के कारण, जी हाँ इस होली पर कलर थेरेपी का जोर रहने वाला है।

कालसर्प योग निवारण पूजन

दिनांक 17 फरवरी 2015 महाशिवरात्रि के पर्व पर भविष्य दर्शन एवं श्री बाबा रमण गिरि सेवा धाम द्वारा कालसर्प योग शान्ति हेतु पूजन एवं यज्ञ का आयोजन श्री नागमाता मन्दिर, वायु विहार रोड़, बोदला से बिचपुरी रोड़ पर किया जा रहा है। जो भी व्यक्ति कालसर्प योग की शान्ति कराना चाहते है वह अपना नाम पंजीकृत नीचे लिखे हुये फोन न. पर फोन कर के अवश्य करा लें।

फोन न. 9719666777, 9719005262

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

नवरात्रि पर क्या लगायें माता को भोग

पुष्पित पारासर
दैवज्ञ शिरोमणि, ज्योतिष ऋषि,
वास्तु ऋषि, अंक विशारद

नवरात्र का हिन्दु धर्म में अति विशेष महत्व है। हिन्दू धर्मग्रंथो में शक्ति संपनता ज्ञान सुख आरोग्य एंव समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए शक्ति के नौ स्वरूपों यानी माता नवदुर्गा की पूजा का महत्व बताया गया है। नवदुर्गा का अर्थ है माता दुर्गा के नौ दिव्य स्वरूप मां दुर्गा को दुर्गति का नाश करने वाली शक्ति कहा जाता है। नवरात्रि में मां दुर्गा की रात्रि में सच्चे मन से की गयी आराधना विशेष फलदायी है ऐसा विश्वास है कि नवरात्रि की नौ रातों में माता दुर्गा की नौ शक्तियों के अलग अलग स्वरूपों की पूजा और प्रातः उनको प्रतिदिन अलग अलग भोग चढ़ाने से माता अपने सभी भक्तों की प्रत्येक कामनाओं को पूरा कर उन्हें बल बुद्धि धन यश और दीर्घ आयु का वरदान देती है। यहाँ पर हम आपको माता दुर्गा को प्रतिदिन चढ़ाए जाने वाले भोग के बारे में बता रहे है जिससे आप सभी भक्तों की पूजा आपको अवश्य ही मनवांछित फल प्रदान करें।

प्रथम नवरात्रि के दिन मां शैल पुत्री के चरणों में गाय का घी अर्पित करने से भक्तों को आरोग्य का आर्शीवाद मिलता है उनका मन एंव शरीर दोनों ही निरोगी रहता है।

दूसरे नवरात्रि के दिन माता ब्रह्मचारिणी को शक्कर का भोग लगाकर घर के सभी सदस्य इसका प्रसाद ग्रहण करें, इससे माता के भक्तों की आयु में वृद्धि एंव परिवार के सभी सदस्यो की अकाल मृत्यु से भी रक्षा होती है।

तीसरे नवरात्रि के दिन माता चंद्रघंटा को मिश्री, खीर या दूध से बनी मिठाई का भोग लगाकर इसका प्रसाद वितरीत करें, इससे माता के भक्तों के सभी दुख और भय दूर हो जाते है।

चौथी नवरात्रि के दिन मां दुर्गा के माता कुष्मांडा के दिव्य रूप को मालपुए का भोग लगाकर किसी भी दुर्गा मंदिर में ब्राह्मणों को इसका प्रसाद वितरीत करे। इसमें माता की कृपा स्वरूप उनके भक्तों को ज्ञान की प्राप्ति होती है। बुद्धि और कौशल का विकास होता है।

पांचवे नवरात्रि के दिन मां स्कंदमाता को केले का प्रसाद चढाने से माता के भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती है। उन्हें परम आनंद की प्राप्ति होती है।

छठे नवरात्रि के दिन मां कात्यायनी को शहद का भोग लगाकर इनकी पूजा अर्चना करें। मां कात्यायनी की सच्चे हद्रय से पूजा करने से साधक के अन्दर अद्भुत शक्ति एंव आकर्षण शक्ति का संचार होता है।

सातवें नवरात्रि पर मां कालरात्रि को गुड का भोग चढाने व उसे योग्य ब्राह्मणो को दान करने से शोक एंव सभी पापों से मुक्ति मिलती है और भक्तों की सभी प्रकार के संकटो से भी रक्षा होती है।

आठवें नवरात्रि को माता महागौरी को हलवे और नारियल का भोग लगाएं व नारियल का दान करें। इससे धन वैभव की प्राप्ति होती है और संतान का उत्तम सुख प्राप्त होता है।

नवें नवरात्रि के दिन माता सिद्धिदात्री को खीर का भोग लगाकर काले तिल का दान दे। इससे माता के भक्तों के समस्त शत्रुओं का दमन होता है और अकाल मृत्यु की भय से भी छुटकारा मिलता है।

नवरात्रि में कन्था पूजन का महत्व : नवरात्रि सौन्दर्य, हर्ष उल्लास उमंगो का पर्व है। कहते है नवरात्रि में माँ दुर्गा धरती पर भ्रमण करती है और अपने सच्चे भक्तों पर कृपा दृष्टि बरसाते हुए उनकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करती है। नवरात्रि में माता की कृपा पाने के लिए 2 से लेकर 5 वर्ष तक की नन्ही कन्याओं के पूजन का विशेष महत्व है। पुराणों के अनुसार इनके माध्यम से माता दुर्गा को बहुत आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है।

इन नौ दिनों तक प्रतिदिन इन देवी स्वरूप कन्याओं को अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य से भेंट देना अति शुभ माना जाता है। इन दिनों इन नन्ही देवियों को फूल, श्रंगार साम्रगी, मीठे फल (जैसे केले, सेब, नारियल, आदि) मिठाई, खीर, हलवा, कपड़े, रूमाल, रिबन, खिलौने, मेंहदी, आदि उपहार में देकर मां दुर्गा की अवश्य ही कृपा प्राप्त की जा सकती है।

जिस दिन आप कन्या को खिलाएं/पूजन करें उस दिन तो

शेष पेज 19 पर.....

कालसर्प योग निवारण पूजन

दिनांक 17 फरवरी 2015 महाशिवरात्रि के पर्व पर भविष्य दर्शन एवं श्री बाबा रमण गिरि सेवा धाम द्वारा कालसर्प योग शान्ति हेतु पूजन एवं यज्ञ का आयोजन श्री नागमाता मन्दिर, वायु विहार रोड़, बोदला से बिचपुरी रोड़ पर किया जा रहा है। जो भी व्यक्ति कालसर्प योग की शान्ति कराना चाहते है वह अपना नाम पंजीकृत नीचे लिखे हुये फोन न. पर फोन कर के अवश्य करा लें।

फोन न. 9719666777, 9719005262

जानिए राहु से प्रभावित (ग्रस्त) मनुष्य के लक्षण

पं. दयानन्द शास्त्री

हम जहां रहते है वहां कई ऐसी शक्तियां होती है जो हमें दिखाई नहीं देतीं किंतु बहुधा हम पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है जिससे हमारा जीवन अस्त व्यस्त हो उठता है। और हम दिशाहीन हो जाते है। इन अदृश्य शक्तियों को ही आम जन ऊपरी बाधाओं की संज्ञा देते है। भारतीय ज्योतिष में ऐसे कतिपय योंगों का उल्लेख है जिनके घटित होने की स्थिति में ये शक्तियां सक्रिय हो उठती है और उन योगों के जातकों के जीवन पर अपना प्रतिकूल प्रभाव डाल देती है।

भारतीय संस्कृति के अनुसार प्रेत योनि के समकक्ष एक और योनि है जो एक प्रकार से प्रेत योनि ही है। लेकिन प्रेत योनि से थोडा विशिष्ट होने के कारण उसे प्रेत न कहकर पितृ कहते है। प्रेत लोक के प्रथम दो स्तरों की मृतात्माएं पितृ योनि की आत्माएं कहलाती है। इसीलिए प्रेत लोक के प्रथम दो स्तरों को पितृ लोक की संज्ञा दी गयी है।

भारतीय ज्योतिष में सूर्य को पिता का कारक व मंगल को रक्त का कारक माना गया है। अतः जब जन्म कुण्डली में सूर्य या मंगल, पाप प्रभाव में होते है तो पितृदोष का निर्माण होता है। पितृ दोष वाली कुंडली में समझा जाता है कि जातक अपने पूर्व जन्म में भी पितृदोष से युक्त था। प्रारब्धवश वर्तमान समय में भी जातक पितृदोष से युक्त है।

जन्म के समय व्यक्ति अपनी कुण्डली में बहुत से योगों को लेकर पैदा होता है। वह योग बहुत अच्छे हो सकते है, बहुत खराब हो सकते है। मिश्रित फल प्रदान करने वाले हो सकते है या व्यक्ति के पास सभी कुछ होते हुए भी वह परेशान रहता है। सब कुछ होते भी व्यक्ति दुखी होता है। इसका कारण हो सकता है? कई बार व्यक्ति को अपनी परेशानियों का कारण नहीं समझ आता तब वह ज्योतिषीय सलाह लेता है, तब उसे पता चलता है कि उसकी कुण्डली में पितृ दोष बन रहा है और इसी कारण वह परेशान है।

बृहतपाराशर होरा शास्त्र के अनुसार जन्म कुंडली में 14 प्रकार के शापित योग हो सकते है। जिनमें पितृ दोष, मातृ दोष, भातृ दोष, मातुल दोष, प्रेत दोष आदि को प्रमुख माना गया है। इन शाप या दोषों के कारण व्यक्ति को स्वास्थ्य हानि, आर्थिक संकट, व्यवसाय में रूकावट, संतान संबंधी समस्या आदि का सामना करना पड सकता है। पितृ दोष के बहुत से कारण हो सकते है। उनमें से जन्म कुण्डली के आधार पर कुछ कारणों का उल्लेख किया जा रहा है जो निम्नलिखित हैः–

जन्म कुण्डली के पहले, दूसरे, चौथे, पांचवे, सातवें, नौवें या दसवें भाव में यदि सूर्य राहु या सूर्य शनि एक साथ स्थित हो तब यह पितृ दोष माना जाता है। इन भावों में से जिस भी भाव में यह योग बनेगा उसी भाव से संबंधित फलों में व्यक्ति को कष्ट या संबंधित सुख में कमी हो सकती हे।

सूर्य यदि नीच का होकर राहु या शनि के साथ है तब पितृ दोष के अशुभ फलों में और अधिक वृद्धि होती है। किसी जातक की कुंडली में लगनेश यदि छठें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है और राहु लग्न में है तब यह भी पितृ दोष का योग होता है।

यदि समय रहते इस दोष का निवारण कर लिया जाये तो पितृदोष से मुक्ति मिल सकती है। पितृदोष वाले जातक के जीवन में सामान्यतः निम्न प्रकार की घटनाएं या लक्षण दिखायी दे सकते है।

1. यदि राजकीय/प्राइवेट सेवा में कार्यरत हैं तो उन्हें अपने अधिकारियों के कोप का सामना करना पडता है। व्यापार करते हैं, तो टैक्स आदि मुकदमें झेलने होंगें। सामान की बर्बादी होगी।
2. मानसिक व्यथा का सामना करना पडता है। पिता से अच्छा तालमेल नहीं बैठ पाता।
3. जीवन में किसी आकस्मिक नुकसान या दुर्घटना के शिकार होते है।
4. जीवन के अन्त समय में जातक का पिता बीमार रहता है या स्वंय को ऐसी बीमारी होती है जिसका पता नहीं चल पाता है।

शेष पेज 18 पर.....

कालसर्प योग निवारण पूजन

दिनांक 17 फरवरी 2015 महाशिवरात्रि के पर्व पर भविष्य दर्शन एवं श्री बाबा रमण गिरि सेवा धाम द्वारा कालसर्प योग शान्ति हेतु पूजन एवं यज्ञ का आयोजन श्री नागमाता मन्दिर, वायु विहार रोड़, बोदला से बिचपुरी रोड़ पर किया जा रहा है। जो भी व्यक्ति कालसर्प योग की शान्ति कराना चाहते है वह अपना नाम पंजीकृत नीचे लिखे हुये फोन न. पर फोन कर के अवश्य करा लें।

फोन न. 9719666777, 9719005262

क्या है बंधन

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

विज्ञान ने एक नियम प्रतिपादित किया है कि हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। हमें निश्चय ही मनन करना होगा कि उपर्युक्त घटनाएं जो हमारे आस पास घटित हो रही हैं, वे किन क्रियाओं की प्रतिक्रियाएं है? हमें यह भी मानना होगा कि विज्ञान की एक निश्चित सीमा है। अगर हम परावैज्ञानिक आधार पर इन घटनाओं को विस्तृत रूप से देखें तो हम निश्चय ही यह सोचने पर विवश होंगे कि कहीं यह बंधन या स्तंभन की परिणति तो नहीं है। क्या यह किसी तांत्रिक अभिचार के कारण हो रहा हों। यह स्थिति हमारी कमजोर ग्रह स्थितियों व गण के कारण भी उत्पन्न हो जाया करती है। हम भिन्न श्रेणियों के अंतर्गत इसका विश्लेषण कर सकते हैं। इनके अलग–अलग लक्षण हैं इन लक्षणों और उनके निवारण का संक्षेप में वर्णन यहां प्रस्तुत है।

दुकान/फैक्ट्री/कार्यस्थल की बाधाओं के लक्षण : किसी दुकान या फैक्ट्री में मन नहीं लगना। ग्राहकों की संख्या में कमी आना। आए हुए ग्राहकों से मालिक का अनावश्यक तर्क–वितर्क कुतर्क और कलह करना। श्रमिकों व मशीनरी से संबंधित परेशानियाँ। मालिक को दुकान में अनावश्यक शारीरिक व मानसिक भारीपन रहना। दुकान या फैक्ट्री जाने की इच्छा न करना। तालेबंदी की नौबत आना। दुकान ही मालिक को खाने लगे और अंत में दुकान बेचने पर भी नहीं बिके।

कार्यालय बंधन के लक्षण : कार्यालय बराबर नहीं जाना। साथियों से अनावश्यक तकरार। कार्यालय में मन नही लगना। कार्यालय और घर के रास्ते में शरीर में भारीपन व दर्द की शिकायत होना। कार्यालय में बिना गलती के भी अपमानित होना।

घर परिवार में बाधा के लक्षण : परिवार में अशांति और कलह। बनते काम का ऐन वक्त पर बिगडना। आर्थिक परेशानियां। योग्य और होनहार बच्चों के रिश्तों में अनावश्यक अड़चन। विषय विशेष पर परिवार के सदस्यों का एकमत न होकर अन्य मुद्दों पर कुतर्क करके आपस में कलह कर विषय से भटक जाना। परिवार का कोई न कोई सदस्य शारीरिक दर्द, अवसाद, चिड़चिडेपन एंव

शेष पेज 16 पर.....

सूरदास जी की दिव्य दृष्टि: वि.स. 3000 के बाद सत्ययुग का प्रवेश होगा।

सुरेश अग्रवाल
आगरा

भारतीय शास्त्रो में कुल चार युग बताये गये है– सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापर युग, कलियुग। ज्योतिषशास्त्र में भी इन्ही चारों युगों को मान्यता दी गई है। सृष्टि का आरम्भ सत्ययुग से होता है, जो सत्रह लाख अटाईस हजार वर्ष तक चलता है। त्रेतायुग बारह लाख छियानवे हजार वर्ष का होता है। द्वापर युग की अवधि आठ लाख चौंसठ हजार वर्ष की है। वर्तमान में कलियुग संचरण कर रहा है, जिसकी आयु चार लाख बतीस हजार वर्ष है। चारों युगों का योग तैंतालीस लाख बीस हजार वर्ष है। जब ये चारों युग 1000 बार अपना भ्रमण पूरा करते है, तो चार अरब बतीस करोड वर्ष होते है इसी को एक कल्प कहते है, जो ब्रह्माजी का एक दिन होता है। और इतनी ही रात्रि होती है। अर्थात् ब्रहमाजी का एक अहोरात्र रात दिन आठ अरब चौसंठ करोड़ वर्षो के बराबर कहा गया है।

आयुर्वेद में ऋतुओं के अनुसार ही रोगों की उत्पत्ति एंव उनके उपचारों के बारे में उल्लेख मिलता है। ऋतुएँ छः होती है। गर्मी, वर्षा, शीत, हेमन्त, शिशिर तथा बसन्त। प्रत्येक ऋतु में सभी ऋतुएँ चार चार घण्टे के क्रम से चक्कर लगाती रहती है। इसी प्रकार से प्रत्येक युग में चारों युग भी थोडे थोडे समय के लिए आते है। कलियुग के बाद सत्ययुग को ही आना है। अतः कलियुग में भी थोडे थोडे अन्तर से सभी युग आते रहेंगें। यह प्रकृति का अटल विधान है। महाकवि सूरदास का निम्नलिखित पद भी उक्त विधान की सत्यता को प्रतिपादित करता प्रतीत होता है।

रे मन धीरज क्यों न धरे।
संवत् दो हजार के ऊपर ऐसो जोग परे।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्खिन चहुँ दिसि काल परे।।
अकाल मृत्यु जगमाहीं व्यापे परजा बहुत मरे।
सहस बरस लगि सतयुग बीते धर्म की बेल बढ़े।।
स्वर्ण फूल बन पृथ्वी फूले सुख की दशा फिरे।
सूरदास यह हरि की लीला टारे नाहिं टरे।।

शेष पेज 17 पर.....

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़,
आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

मनोविज्ञान
Psychology

श्रीमती मोहिनी पाराशर

मनोविज्ञान शब्द का अर्थ प्राचीन काल से ही विभिन्न प्रकार से लगाया जाता रहा है जबकि यह विज्ञान अत्यन्त गतिशील एंव विकासो न्मुख है फिर भी मनोविज्ञान का कोई अर्थ निश्चित नही हो पाया है। मनोविज्ञान का अर्थ मनोविज्ञान के कार्यो व क्षेत्र के अनुसार बदलता गया। प्रत्येक व्यक्ति अपने बारे में तथा प्राकृतिक रहस्यों के बारे में अधिक से अधिक जानने का इच्छुक होता है। इन रहस्यों को हर व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार सुलझाने की कोशिश भी करता है। किस व्यक्ति में कितनी क्षमता है यह ज्ञात करना मनोविज्ञान का कार्य है।

मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो Human Behaviour तथा Mental Processes का अध्ययन करता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो Systematically Observable Behaviour का अध्ययन करता है। तथा प्राणी के भीतर के Mental Physiological Processes जैसे चिन्तन, भाव आदि तथा बातावरण की घटनाओं के साथ उनका सम्बन्ध जोड़कर अध्ययन करता है। मानव प्रकृति या स्वभाव को समझने के लिये 3 levels बताये गये है।

Conscious- चेतना से तात्पर्य मन के वैसे भाग से होता है। जिसमें वे सभी अनुभूतियाँ एंव संवेदनाए होती है जिनका सम्बन्ध वर्तमान से होता है। दूसरे शब्दों में चेतन क्रियाओं का संबंध तात्कालिक अनुभवों से होता है। चेतन व्यक्तित्व का लघु एंव सीमित पहलू का प्रतिनिधित्व करता है। किसी भी क्षण में व्यक्ति के मन में आ रही अनुभूतियों का संबंध उसके चेतन से ही होता है।

Subconscious or Preconscious- अर्द्धचेतन से तात्पर्य वैसे मानसिक स्तर से होता है जो सचमुच में न तो पूर्णतः चेतन होता है और न ही पूर्णतः अचेतन। इसमें वैसे इच्छाएं, विचार, भाव आदि होते है जो हमारे वर्तमान चेतन या अनुभव में नही होते है। जैसे अलमारी में हम कोई किताब को नहीं पाते और थोडी देर के लिए परेशान हो जाते है फिर कुछ सोचने पर याद आता है कि उस किताब को तो हमने अपने मित्र को दे दिया था।

Unconscious- अद्धचेतन का शाव्दिक अर्थ है जो चेतन या चेतना से परे हो। हमारे कुछ अनुभव इस प्रकार के होते है जो न तो हमारी चेतन में होते है और न ही अद्धचेतन में। ऐसे अनुभव अचेतन में होते है। अचेतन मन में रहने बाले विचार एंव इच्छाओं का स्वरूप Sexual, Antisocial, Immoral, Hateful होता है। ऐसी इच्छाएं एंव विचारों को दिन प्रतिदिन की जिन्दगी में पूरा करना संभव नहीं हो पाता है। अतः उसको चेतन से हटाकर अचेतन में repress कर दिया जाता है जहाँ जाकर ऐसी इच्छाएं समाप्त नही होती है, हां लेकिन थोडी देर के लिए निष्क्रिय हो जाती है। और चेतन में आने के लिए प्रयास करती है। ❋❋❋

हम अमरूद क्यों खायें

डा. यू. के. शर्मा

भारत वर्ष प्रकृति के खजाने के नाम से मशहूर है। यही कारण है कि फलों के लिये हमारा देश विश्व प्रसिद्ध हैं। विभिन्न ऋतुओं के अनुसार प्रकृति ने फलों के उपहार हमें दिये है।

जाड़े की ऋतु में पैदा होने वाले फलों में अमरूद भी एक है। अमरूद मैदानी फल है। हमारे देश में उच्च कोटि के अमरूद इलाहाबाद व लखनऊ क्षेत्र में पैदा होते हैं इसकी दो जातियाँ होती है। एक लाल एक सफेद। लाल गूदे बाले अमरूद स्वादिष्ट और शक्ति वर्धक होते है।

अमरूद को कच्चा और पक्का दोनो रूप में खाया जाता है। वैज्ञानिक मतानुसार पके फलों की अपेक्षा कच्चे फल ज्यादा जीवन शक्ति युक्त होते है।

आयुर्वेदानुसार अमरूद रूचिकर एंव धैर्य पुष्टिकारक होता है। इसके खाने से उन्माद का नाश होता है। जिन लोगों में पित्र प्रधान उन्माद पागल पन हो उन्हे औषधि के साथ पथ्य के रूप में अमरूद का सेवन कराना हितकर होता है। जिन व्यक्तियों को भोजनोपरान्त जलन रहती है। उनके लिये भी यह फल मुफीद है। पका अमरूद नमक के साथ खाने से दिल अमाश्य व पाचन शक्ति दृढ होती है। कब्ज रोगी चाहे कितना पुराना कब्ज हो या बबासीर रोगी यदि अमरूद का लाल अमरूद हो तो ज्यादा अच्छा है। लगातार सेवन करे तो काफी लाभ होता है। अमरूद मन को भी प्रसन्न रखता है।

अमरूद का रासायनिक विश्लेषण बताता है कि इसमें प्रोटीन 37ग्राम, चर्बी 20ग्राम, तथा चीनी 2.27ग्राम पायी जाती है। इसमें विटामिन बी व विटामिन सी भी प्रचुर मात्रा में होता है। इसमें टैनिन काफी मात्रा में होता है तथा कैलशियम भी पाया जाता है। मुँह के छाले व मसूडे फूल जाने पर अमरूद के पते के काढे से कुल्ला करना चाहिये और दस्त में भी अमरूद की नरम पत्तियों का काढा देने से लाभ होता है। अमरूद की छाल व पते का काढा काँच निकलने की समस्या में अपने सकोचक व रेचक प्रभाव के कारण काफी असर कारक है। काढे से गुदा प्रब्धालन करना भी लाभ प्रद होता है। भांग का नशा होने पर भी इसकी पत्तियों का काढा व 3,4 अमरूद खिलाना फायदा देता है।कुछ लोगो के विचार निराधार है कि अमरूद खाने से पेट में अफरा दर्द या इसके अन्दर कीडों से हैजा होता है यह गलत है शीतकाल में पैदा अमरूद का फल अत्यन्त बलदायक एंव तृप्तीकारक होता है। हाँ वर्षा ऋतु में अमरूद सेब की भाँति रक्त वृद्धि भी करता है।

विशेष : खाली पेट अमरूद न खायें। जिन व्यक्तियों की पाचन शक्ति कमजोर हो व निर्बल हो वे भी अमरूद न खाये। संध्या समय अमरूद न खायें। अमरूद खाकर पानी कदापि न पियें। देशी अमरूद का बीज नही खाना चाहिये। ज्यादा मसाले डालकर चटपटा कर अमरूद न खाये। तात्पर्य यह है कि सूखे महगे मेवों में ही शक्ति व गहरा गुण है। उन्हे हम अपने साधारण फलो से ही आसानी से व कम व्यय से प्राप्त कर सकते है। ❋❋❋

गायत्री में छ देवियाँ 24 अक्षर क्यो?

पं. चन्द्र शेखर तिवारी
ज्योतिष भूषण, वास्तु रत्न

महेश्वर केवल पराशक्ति द्वारा ही प्रकाशित होते है। अन्यथा कदापि नहीं। समाधि निष्ठ महर्षि भी इस महाविद्या शक्ति के प्रकाश के बिना न महेश्वर को देख सकते है और न पा सकते है। पराशक्ति ही महेश्वर का दिव्य ज्योति स्वरूप है।

अतएव सौन्दर्य लहरी में इसी शक्ति को सम्बोधित करके ठीक ही कहा गया है।

त्वथा हत्वा वामं वपुरपरितृप्तेन मनसाशरीरार्द्धं शम्भो:।।

इसी शक्ति को गायत्री कहते है। अर्थात् गायन्तं त्रापते इति गायत्री जिसका अर्थ है गान करने वाले का त्राण करती है। गायत्री त्रिपाद है और प्रत्येक पाद में आठ अक्षर है। यह आठ दो का घन है। इस दो का भाव है। ज्योति और नाम। यह ज्योतिषा ज्योति और परमा विद्या तथा जीव और चिच्छक्ति का मूल है और इसके भीतर नाम अर्थात् शब्द ब्रह्म है जो अनादि और अव्यय है एंव इसका ब्रह्म रूप प्रणव है। घन अर्थात् क्यूब व्यक्त किये जाने पर चतुष्कोण होता है। इस कारण दो के तीन घन व्यक्त होने पर छः चतुष्कोण हुए अर्थात् त्रिपाद से चतुष्पाद हुआ। प्रत्येक पाद में चार अक्षर होने से गायत्री में चौबीस अक्षर हुए। ये छः चतुष्कोण छ शक्तियां है पराशक्ति, ज्ञानशक्ति, इच्छाशक्ति, क्रियाशक्ति, कुण्डलिनीशक्ति, मातृशक्ति

1. परा शक्ति- शक्ति का मूल और आधार है तथा यहां पर ज्योतिरूपा है।

2. ज्ञान शक्ति- यह यर्थात् में विज्ञान मूलक होने के कारण सब विद्याओं का आधार है।

3. इच्छा शक्ति- इसके द्वारा शरीर के स्नायु मंण्डल में लहरे उत्पन्न होती है जिससे कर्म इन्द्रियाँ इच्छित कार्य करने के निमित्त संचालित होती है।

4. क्रिया शक्ति- यह अध्यान्तिरिक विज्ञान शक्ति है। इसके

शेष पेज 16 पर.....

पीला रंग देता है खुशी की तरंग

ज्योतिष शास्त्र में प्रत्येक रंग का अपना महत्व होता है। प्रत्येक रंग कुछ न कुछ कहता है। अब तो वैज्ञानिक भी इस तथ्य को मानने लगे है। कि रंगो का मनुष्य के जीवन से गहरा रिशता है। रंग अपने गुण के अनुसार प्रभाव दिखाते रहते है।

पीला रंग उमंग बढाने में सहायक है और हमारे मस्तिष्क को अधिक सक्रिय करता है, जिसके फलस्वरूप उठने वाली तरंगे खुशी का अनुभव कराती है। पीले परिधान धारण करने वालों में आत्मविश्वास अधिक होता है क्योकि वे हमारे मस्तिष्क के उस भाग को जागृत रखते है। जो सोचने समझने में मदद करता है।

वैज्ञानिको के अनुसार पीले वस्त्र और पीले खाद्य पदार्थ मन को प्रसन्न रखते है। पीले रंग के परिधान पहनने के साथ ही हमें सप्ताह में 3–4 बार पीले रंग के खाद्य पदार्थ जैसे पीले फल, पीली सब्जियाँ और पीले अनाज का भी उपभोग करना चाहिए। इससे हमारी शरीर के हानिकारक तत्व तथा नकारात्मक ऊर्जा बाहर निकल जाती है। और हमारा नर्वस सिस्टम प्रभावित होने से बचा रहता है। वे अपनी बातों से लोगों को आकर्षित करने की क्षमता रखतें है। और अन्य लोगो की अपेक्षा अधिक स्मार्ट और स्फूर्तिवान होते है।

श्री सुरेश अग्रवाल

रचनाएँ आमंत्रित है

प्रिय पाठकों,

भविष्य निर्णय पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है। इस पत्रिका की विषय सामग्री को और रुचिकर बनाने हेतु रचनाएँ आमंत्रित की जाती है। जिसमें ज्योतिषीय उपायों से प्राप्त परिणाम, आर्युवैदिक चिकित्सा के नुस्खे, व्यायाम प्रणायाम कैसे करें, मुद्राओं से लाभ, व्यवहारिक शिक्षा, भारतीय संस्कारो की स्वीकार्यता, सामाजिक –पारिवारिक हित के लेख, सच्चे संस्मरण आदि हो सकते है।

आप अपनी मौलिक रचनाएँ नीचे दिए गए पते पर, ई. मेल पर या व्हाटस ऐप पर अपनी फोटो सहित भेज सकते है।

हमारा पता है- भविष्य दर्शन, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। पिन : 282002 मों. 9719666777

ई.मेल- pushpit_aayu1910@yahoo.co.in

श्री पुष्पित पारासर
सह-सम्पादक

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें-

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621088, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

मासिक राशिफल

16 फरवरी - 15 मार्च

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस माह में हानि होने का भय लगा रहने की संभावना रहेगी। स्थान परिवर्तन का विचार बनेगा। घरेलू परेशानिया खत्म नहीं होगी। भाईयों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में स्वास्थ्य खराब होने का भय रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नई योजनाओ से हानि होने की संभावना रहेगी। शत्रु से परेशानी होने की संभावना रहेगीं।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस माह में आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव से बचें। नौकरी मे निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रु से परेशानी होने की संभावना रहेगीं। आय से ज्यादा व्यय करेंगे।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– कारोबार में लाभ हाने की स्थिति बनेगी। नई योजनाओं से लाभ की प्राप्ति होगी। भाइयों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। पत्नि सुख से लाभ होगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में वायु रोग होने की संभावना रहेगी। विवादों से दूर रहें। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। मानसिक तनाव से बचें। नई योजनायें बनायेंगे।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– नेत्र रोग से ग्रस्त रहने की संभावना रहेगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। पत्नि से शुभ फलों की प्राप्ति होगी। कार्य मे निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। आय से ज्यादा व्यय करेंगे। शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। यात्रा का सुख प्राप्त होगा। मानसिक तनाव से ग्रस्त रहेंगें। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। सम्पत्ति संबंधित विवाद होना भी संभव हैं। आय से व्यय अधिक होगें। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय मास के अन्त में ठीक हो जायेगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नई योजनाओं से भी लाभ की प्राप्ति न होगी। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। भाइओं के साथ मन-मुटाव की स्थिति बनेगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस माह में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। शत्रु पक्ष प्रबल होगा। क्रोध में वृद्धि होने की संभावना रहेगी। पत्नि से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- धन हानि होने की संभावना रहेगी। आय से ज्यादा व्यय करेंगे। अपमान होने का भय रहेगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। मित्रों से मेल बढ़ेगा। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। अर्थ हानि होने का भय रहेगा। कारोबार से लाभ होने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति संबंधित विवाद होना भी संभव हैं। पत्नि सुख से लाभ होगा।

पुष्पित पारासर

ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

फरवरी	मार्च
16.प्रदोष व्रत 18.महाशिव रात्रि व्रत 20.फुलैरा दौज, श्री रामकृष्ण परम हंस जं., 21.श्री विनायक चतुर्थी व्रत, 26.दुर्गाष्टमी, होलिकाष्टक प्रारम्भ 28.डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पुण्य तिथि	1.आंवला एकादशी व्रत 2.गोविन्द द्वादशी 3.प्रदोष व्रत 5.पूर्णिमा होलिका दहन 6.धुलैड़ी (बसंत उत्सव) 8.विश्व महिला दिवस 9.श्री गणेश चतुर्थी व्रत 11.रंग पंचमी 12.एक नाथ षष्ठी 13.भानु सप्तमी पूजन 14.शीतलाष्टमी पूजन

गृहारम्भ मुहूर्त

फरवरी – 21, **मार्च** – 2

गृह प्रवेश मुहूर्त

फरवरी – नही हैं। **मार्च** – नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

फरवरी – 20, 21, 23, 26

मार्च – 1, 2, 6

नामकरण संस्कार मुहूर्त

फरवरी – नही हैं।

मार्च – 1

सर्वार्थ सिद्ध योग

फरवरी	मार्च
22 ता. रात्रि 08:00 बजे से 23 ता. प्रातः 06:45 तक 24 ता. सायं 05:50 बजे से 26 ता. प्रातः 06:42 तक	01 ता. रात्रि 11:54 बजे से 03 ता. रात्रि 02:32बजे तक 03 ता. प्रातः 06:41 बजे से 04 ता. प्रातः 05:26 तक 08 ता. प्रातः 06:32 बजे से सायं 05:30 बजे तक 12 ता. प्रातः 06:26 बजे से 13 ता. रात्रि 01:10 बजे तक

मासिक राशिफल

16 मार्च - 15 अप्रैल

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यवसाय में रूकावटें आने की संभावना रहेगी। धन हानि होने की संभावना रहेगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। योजनाओं से लाभ होगा। माता को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– धन लाभ होने की संभावना रहेगी। पिता का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। कार्य में निरन्तर हानि होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– प्रियजनों का पूर्ण सूख प्राप्त होगा। शत्रु प्रबल होंगे। मानसिक तनाव से बचें। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। नई योजनायें बनाने में सक्षम रहेंगे।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– योजनाओं से लाभ होगा। इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सम्पत्ति का लाभ होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी लगी रहेगी। गुप्त शत्रु से बचें।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– प्रियजनों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। मानसिक तनाव से बचें। व्यवसाय मास के अन्त में ठीक हो जायेगा। गुप्त शत्रु से बचें।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– पत्नि का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। इस मास में शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। व्यवसाय ठीक रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू–बहिनों का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल रहेंगे। खर्चे अधिक होंगे।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- नौकरी में बदलाव होने की संभावना रहेगी। प्रियजन का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में कारोबार ठीक हो जायेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में लाभ होकर हानि का भय रहेगा। व्यवसाय में बदलाव होने की संभावना रहेगी। अपमान होने का भय रहेगा। इस मास में गुप्त शत्रु से बचें। अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- सन्तानपक्ष से चिन्ता लगी रहेगी। व्यवसाय में रुकावटें आयेंगी। प्रियजनों से मन-मुटाव होने की स्थिति बनेगी। मास में हानि होने का भय रहेगा। मास के अन्त में स्वास्थ्य खराब रहेगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- सन्तानपक्ष से सुख की प्राप्ति होगी। इस माह में वायु रोग होने की संभावना रहेगी। अच्छे लोगों से मेल-जोल बढ़ेंगे स्वास्थ्य खराब रहेगा। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे। कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

मार्च	अप्रैल
18. प्रदोष व्रत **20.** अमावस्या **21.** नवरात्रा प्रारम्भ (प्रतिपदा) **22.** द्वितीय नवरात्रा, तृतीया नवरात्रा, गणगौर व्रत **23.** चतुर्थ नवरात्रा **24.** श्री पंचम **25.** स्कन्द षष्ठी **26.**भानु सप्तम **27.**दुर्गाष्टमी व्रत **28.** राम नवमी, स्वामी नारायण जं. **30.**कामदा एकादशी व्रत	**1.**प्रदोष व्रत, महावीर स्वामी जं.वमन द्वादशी, मूर्ख दि.,वि. स्वास्थ्य दि. **3.** श्री शिवदमनक **4.**पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती **8.**श्री गणेश चतुर्थी व्रत **9.**गुरु तेग बहादुर जं. **11.** गुरु अर्जुन देव जं. **12.** कालाष्टमी **14.**डॉ.भीमराव अम्बेडकर जं. **15.**वरुथिनी एकादशी व्रत

ग्रहारम्भ मुहूर्त

मार्च– नही है। **अप्रैल**– नही है।

गृह प्रवेश मुहूर्त

मार्च– नही है। **अप्रैल**– नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

मार्च– 1, 2, 6, 22, 26, 29, 30

अप्रैल– 2, 4, 5,

नामकरण संस्कार मुहूर्त

मार्च– 1, 8, 9, 16, 18

अप्रैल– 15

सर्वार्थ सिद्ध योग

मार्च	अप्रैल
16 ता. रात्रि 10:27 से 17 ता. प्रातः 06:24 तक 22 ता. प्रातः 06:29 से 23 ता. प्रातः 06:09 तक 24 ता. प्रातः 06:18 से 25 ता. रात्रि 02:00 तक 25 ता. प्रातः 06:17 से 26 ता. रात्रि 01:57 तक 29 ता. प्रातः 06:08 से 30 ता. प्रातः 08:44 तक 31 ता. 06:10 से 11:40 तक	08 ता. प्रातः 05:42 से 09 ता. प्रातः 06:55 तक 09 ता. प्रातः 06:01 से 10 ता. प्रातः 06:51 तक 12 ता. प्रातः 07:10 से 13 ता. प्रातः 05:51 तक 13 ता. प्रातः 06:11 से 14 ता. प्रातः 05:51 तक

उतावलापन

(मामा की कलम से)

विजय शर्मा
आगरा

दूरदर्शी गिद्ध ने कथा आरम्भ की–

उज्जयिनी नगरी में माधव नाम का एक ब्राह्मण रहता था। वह यजमानों के दान पर ही जीवित था। यानी उसकी जीविका का एकमात्र साधन दान था जो नगर के यजमानों द्वारा उसे दिया जाता था।

वह अपने घर में पत्नी तथा एक छोटे बच्चे के साथ रहता था। बच्चा इतना छोटा था कि उसने अभी बैठना भी नहीं सीखा था। ब्राह्मण बच्चे को गोद में लेकर खिलाता तो कभी उसे अपने पेट पर लिटा लिटाकर कह कहे लगाता। उसकी पत्नी इतनी सुंदर थी कि उसे अकेला छोडकर कहीं जाने को तैयार नहीं होता था। वह पत्नी का इतना रसिया था कि यदि वह द्वार के पास भी आती तो ब्राह्मण कई कई दिन उसका पहरा लगाया करता।वह नहीं चाहता कि उसकी पत्नी किसी अन्य मर्द के सामने आये या उसका चेहरा कोई भी मर्द देखे। यदि उसकी पत्नी कभी रसोई में खाना बनाने के लिए जाती तो ब्राह्मण उसके साथ वहीं बैठकर उसका हाथ बंटाने का कार्य करता रहता है। इतने में वह खाना तैयार कर लेती तब तक वह अपने बच्चे को गोद में लेकर उसी के पास बैठा रहता था। एक दिन उसकी पत्नी उसे अपने बच्चे की रक्षा के लिए बैठाकर स्वयं स्नान करने चली गई। उसने कहा, मुन्ना सो रहा है। और मैं नहाने जा रही हूँ। जरा आप मुन्नें की देखभाल करते रहना।स्नानगृह उनके कमरे से जरा कुछ ही दूरी पर था, क्योकि उनका मकान काफी बड़ा था इसलिए पत्नी को स्नान करने और आने– जाने में तथा पानी आदि का प्रबन्ध करने में कुछ देरी हो सकती थी। ब्राह्मण देवता ने पत्नी की तरफ देखा और कहा मेरी प्रिय रानी। तुम मेरी एक बात मानों। क्या....? पत्नी ने कहा।

'तुम मुन्ने के पास बैठो और मैं आपके स्नान के लिए पानी आदि का प्रबन्ध करके आता हूँ, फिर तुम जाकर केवल स्नान करके आ जाना' ब्राह्मण ने कहा। आप तो मुझे कुछ भी नहीं करने देते। पत्नी मीठे स्वर में बोली यदि मैं कुछ करूंगी नहीं तो मेरे हाथ पैर निठल्ले हो जाएंगे और मैं कुछ करने के लायक नहीं रह जाऊंगी। ऐसा आपको नहीं करना चाहिए। तुम जानती हो कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ। मैं नहीं चाहता कि तुम्हें खाट से नीचे पैर भी उतारना पडे। इतना कहकर वह ब्राह्मण पत्नी के लिए स्नान का प्रबन्ध करने चला गया। लौटकर आया और अपनी पत्नी से कहा, जाओं अब मैं आपके लिए प्रबन्ध कर आया हूँ।पत्नी ज्यों ही स्नान करने गई, उनके घर एक यजमान आया और उसने कहा, माधव जी। मेरे साथ आईये। ब्राह्मण माधव बोला कहाँ?

यजमान ने कहा मैं आपको भोजन कराऊंगा आपके घर के लिए भी अच्छे–अच्छे भोजन दूंगा। अच्छे–अच्छे भोजन का नाम सुनकर माधव के मुंह में पानी भर आया, परन्तु उसे सोचना पड़ा। माधव सोच रहा था– यदि जाता हूँ तो बच्चे की रक्षा कौन करेगा, और यदि वह नहीं जाता तो यजमान अवश्य ही किसी दूसरे ब्राह्मण को बुला लायेगा। यजमान को बिठाकर वह घूम–फिरकर पुनः सोचने लगा। बहुत सोच–विचार करने के बाद उसे एक उपाय सूझा। उसने सोचा कि जो मैंने नेवला पाल रखा है। क्यों न बच्चे की रक्षा के लिए नेवले को नियुक्त कर दूं। वह पले हुए नेवले को बच्चे की रक्षा के लिए वहीं छोड़कर स्वयं यजमान के साथ भोजन खाने के लिए चला गया। ब्राह्मण के जाने के बाद एक सर्प बिल से निकला और बच्चे की ओर फन उठाकर देखने लगा। सर्प को देखते ही बच्चे की रक्षा के विचार से नेवला सर्प पर झपटा और उसने उसके टुकडे–टुकडे कर दिये।भोजन करके ब्राह्मण घर लौटा तो नेवले ने ही ब्राह्मण का द्वार पर स्वागत किया। सर्प का रक्त अब भी नेवले के मुख पर लगा था। ब्राह्मण को वह दूर से ही दिखाई दे गया। उसने समझा कि नेवले ने उसके पुत्र को खा लिया है। फिर क्या था, उसने हाथ के डण्डे से नेवले को जान से मार दिया। सर्प मरा हुआ था। ब्राह्मण समझ गया कि यदि सर्प को नेवले ने न मारा होता तो सर्प बच्चे को डस लेता।

ऐसा हितैषी और निर्दोष नेवले की हत्या करके ब्राह्मण को बहुत पछतावा हुआ।कथा सुनकर गिद्ध बोला, इसलिए मैं कहता हूं कि बात की तह तक पहुंचे बिना क्रोध में कोई कार्य नहीं करना चाहिए। उतावलापन पछतावा ही लाता हैं। राजा को चाहिए कि वह छः दुर्गुणों को अपना शत्रु समझकर छोड दे रात दिन स्त्रियों की कल्पना, व्यर्थ का क्रोध, नश्वर वस्तुओं का अधिक लोभ, झूठा मोह, मान सम्मान की तृष्णा और व्यर्थ का अभिमान।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

राजा चित्रवर्ण बोला मंत्री। तुम्हारी यही सलाह है? मन्त्री प्रत्युत्तर में बोला जी महाराज श्रेष्ठ मन्त्री इन छः गुणों के कारण ही जाना जाता है– स्मरण शक्ति, कार्य में रूचि, बात की तह तक पहुंचने की इच्छा, ज्ञान का सकंल्प, दृढता और सलाह को गुप्त रखना। अतः किसी भी कार्य को बिना सोचे समझे नही करना चाहिए। अविवेकी ही मुसीबतों में फंसता है। विवेकी लोगों से तो सम्पतियाँ स्वयं आकर लिपट जाती है। आप यदि मेरी बात मानें तो सन्धि करना ही उचित है। वैसे तो मनोरथ सिद्ध में चार उपाय साम, दाम, दण्ड और भेद कहे गए हैं, किन्तु इनका फल गिनती में है जबकि मेल से कार्य बनते ही है। राजा यह सुनकर बोला, यह कैसे हो सकता है? मन्त्री ने कहा, महाराज शीघ्र हो जायेगा। मूर्ख सहज में मिलाने योग्य है। बुद्धिमान तो और भी सरलता से प्रसन्न हो जाता है। थोडे ज्ञान से अभिमानी मनुष्य को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकता है। राजा धर्मशील और मन्त्री सर्वज्ञ है। मैंने यह पहले ही मेघवर्ण की बात से और उनके किये कार्यो से जान लिया है। अपने गुणों को नहीं प्रकट करने वाले मनुष्य अपने कर्मो से जाने जाते है। यह सुनकर राजा चित्रवर्ण बोला, इन बातों को रहने दो, जो करना है सो करों। मन्त्री दूरदर्शी गिद्ध की बात समझ में आने लगी। वह सोचने लगा, यदि मै ऐसा नहीं करता जैसा मन्त्री ने बताया है तो मन्त्री और मेरे अन्य सेनापति भी नाराज हो सकते है। सेना में भी बगावत हो सकती है। इसमें तो नुकसान के अतिरिक्त और कुछ मिलने वाला नहीं है। राजा ने दूरदर्शी गिद्ध को आज्ञा दी मन्त्रीजी। आप जो करें, परन्तु अपना और अपनी सेना का ख्याल करके कुछ करना ठीक है महाराज। जो उचित होगा सो किया जायेगा। यह कहकर महामंत्री गिद्ध किले के अन्दर चला गया। बगुले ने राजा हिरण्यगर्भ से निवेदन किया– महाराज! महामंत्री गिद्ध हमारे पास सन्धि के लिए आए है।राजहंस बोला, हे मंत्री! वह फिर किसी सम्बन्ध से आया होगा। ❋❋❋

शेष पेज 10 से आगे.....

निराशा का शिकार रहता हो। घर के मुख्य द्वार पर अनावश्यक गंदगी रहना। इष्ट की अगरबतियां बीच में ही बुझ जाना। भरपूर घी, तेल, बत्ती रहने के बाद भी इष्ट का दीपक बुझाना या खंडित होना। पूजा या खाने के समय घर में कलह की स्थिति बनना।

व्यक्ति विशेष का बंधन : हर कार्य में विफलता। हर कदम पर अपमान। दिल और दिमाग का काम नहीं करना। घर में रहे तो बाहर की और बाहर रहे तो घर की सोचना। शरीर में दर्द होना और दर्द खत्म होने के बाद गला सूखना। हमे मानना होगा कि भगवान दयालु है। हम सोते हैं पर हमारा भगवान जागता रहता है। वह हमारी रक्षा करता है। जाग्रत अवस्था में तो वह उपयुक्त लक्षणों द्वारा हमे बाधाओं आदि का ज्ञान करवाता ही है। निद्रावस्था में भी स्वप्न के माध्यम से संकेत प्रदान कर हमारी मदद करता है कि हम होश व मानसिक संतुलन बनाए रखें। हम किसी भी प्रतिकूल स्थिति में अपने विवेक व अपने इष्ट की आस्था को न खोएं, क्योकि विवेक से बडा कोई साथी और भगवान से बड़ा कोई मददगार नहीं है। इन बाधाओं के निवारण हेतु हमें तुरन्त किसी विशेषज्ञ से मिलना चाहिए जिससे बंधन मुक्ति के उपाय किये जा सके। ❋❋❋

शेष पेज 16 से आगे.....

द्वारा सात्विक इच्छाशक्ति कार्य रूप में परिणत होकर व्यक्त फल उत्पन्न करती है।

5. कुण्डली शक्ति– इसके समष्ठी और व्यष्ठी दो रूप है। सृष्टि में यह प्राण अर्थात् जीवन शक्ति, जो समष्ठी रूप में सर्वत्र नानारूपों में वर्तमान है। आकर्षण और विश्लेषण दोनो इसके रूप है। विद्युत और आन्तरिक तेज भी इसके रूपान्तर है। प्रारब्ध कर्मानुसार यह शक्ति ब्राहम आभ्यान्तर में समान्ता सम्पादन करती है। और इसी के कारण पुर्नजन्म भी होती है।

6. मातृशक्ति– यह अक्षर, बीजाक्षर, शब्द, वाम्प तथा यर्थात् दान विद्या की भी शक्ति है। यन्त्र शास्त्र के मंत्रो का प्रभाव इसी शक्ति पर निर्भर है। इसी शक्ति की सहायता से इच्छाशक्ति अथवा क्रियशक्ति फल प्रदा होती है। कुण्डलिनी शक्ति का आध्यात्मिक भाव भी न तो इस शक्ति की सहायता क बिना जागृत होता है। और न लाभदायक ही है। जब सात्विक साधक के निरन्तर सात्विक मंत्र का जाप करने और ध्यान का अभ्यास करने से मंत्र की सिद्धी होती है। तब इसकी इच्छाशक्ति, क्रिया शक्ति और कुण्डलिनी शक्ति भी स्वंय अनुसरण करती है। अतएव यह मंत्र शक्ति सव शक्तियाँ का मूल है। क्योकि शव्द ही दृष्टि का कारण है। सृष्टि के सब नाम इसी शक्ति के रूपान्तर है। और रूप भी इसी के अधीन है। वीज मन्त्र इसी शक्ति का व्यक्त रूप भूलोक में है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर वह पवित्र आत्मा का उद्वार माता की भांति करता है, किन्तु अपवित्र आत्मा और कामाशक्त को अधोगति देता है। ❋❋❋

रचनाएँ आमंत्रित है

प्रिय पाठकों,

भविष्य निर्णय पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है। इस पत्रिका की विषय सामग्री को और रुचिकर बनाने हेतु रचनाएँ आमंत्रित की जाती है। जिसमें ज्योतिषीय उपायों से प्राप्त परिणाम, आयुर्वेदिक चिकित्सा के नुस्खे, व्यायाम प्रणायाम कैसे करें, मुद्राओं से लाभ, व्यवहारिक शिक्षा, भारतीय संस्कारो की स्वीकार्यता, सामाजिक –पारिवारिक हित के लेख, सच्चे संस्मरण आदि हो सकते है।

आप अपनी मौलिक रचनाएँ नीचे दिए गए पते पर, ई. मेल पर या व्हाटस ऐप पर अपनी फोटो सहित भेज सकते है।

हमारा पता है– भविष्य दर्शन, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। पिन : 282002 मों. 9719666777

ई.मेल– pushpit_aayu1910@yahoo.co.in

श्री पुष्पित पाराशर

सह–सम्पादक

शेष पेज 6 से आगे.....

सेवा भावी युवाः– घर, परिवार, मुहल्ला, समाज मे सेवा करने का अवसर कभी नहीं छेडना चाहिए, बल्कि अवसर को तलाशते रहना चाहिए। किसी के दिल को सेवा भावना से आप आसानी से जीत सकते है। सेवा कार्य करने से जहाँ स्वयं को आत्मसन्तोष प्राप्त है वही लोगो से सम्मान भी मिलता है। समाज में इज्जत मिलती है। आड़े वक्त में लोग आपकी मदद करने को हमेशा तैयार मिलेंगें। आज की युवा पीढी यदि उपरोत चार सूत्रों को आधार बना लें तो युवा शक्ति को राष्ट्र को राष्ट्र शक्ति बनने से कोई रोक नहीं सकता है। समस्या यह नही है कि युवाओं में ताकत नहीं है समस्या यह कि वे अपने आप को पहचान नही पा रहे है।

एक घटना है कि एक बार जंगल में शेर का बच्चा बिछुड गया, उधर से भेंडों का झुंड चला आ रहा था वह बच्चा भी भेंडो के साथ हो गया उन्ही के साथ रहते हुए बडा हुआ। कुछ दिन पश्चात् उस जंगल में शेर आया। शेर की दहाड़ सुनकर भेंड भागने लगे, शेर ने देख लिया उसे पकडा और उसे तालाब के पास ले गया, अपनी और उसकी परछाई दिखायी और उसे विश्वास दिलाया कि वह शेर का बच्चा है भेंड का नहीं और उसे अपने साथ ले गया। ठीक इसी प्रकार से हम है तो ऋषियों की सन्तान, लेकिन अपने आप भुला बैठे है और दीन हीन हालत में जहाँ जहाँ समय काट रहे है। साथियों वास्तव में हममे वह अदम्य साहस और ऊर्जा भी पड़ी है जिसका नियोजन कर हम अपने घर परिवार ही नही बल्कि इस वसुन्धरा को चमका सकते है और ये दायित्व हमारा है। इसे हमे करना हीं है। युग ऋषि पं. श्री राम शर्मा आचार्य के संकल्प को पूरा करने का यहीं उपयुक्त समय है। क्या करें, आज के युवाओं की संवेदना को जागृत करे यदि संवेदना जाग गई तो युवा वकील की नजरें पैसों पर न होकर पीडितों को न्याय दिलाने में होगी। डाक्टरों की अन्त भावना संवेदित हो गई तो कितनी ही कराहटें मुस्कराहटों में बदलेगी।

विद्यार्थी जो ज्ञान की साधना करते है। कितनों को ज्ञान बाँटते नजर आयेगें। संवेदनशील धनपति युवा के सामने कोई विद्यार्थी धन के अभाव में पढनें से वंचित नही रह पाएगा। संवेदना को जाग्रत होने पर कोई बहन दहेज के नाम पर जिंदा नही जलाई जाएगी। इस संवेदना को जाग्रत करने का बीडा उठाना है। क्योकि इस पुनीत कार्य को करने हेतु ही आपका जन्म हुआ और आप इस समय युवावस्था को प्राप्त हुए है।अतः इस देश के समस्त युवा साथियों का हम आवाहन करते है। कि महाकाल की पुकार को हिमालय वासी ऋषि संतों की भावनाओं को सुनते हुए समय की माँग को समझते हुए, आज का श्रेष्ठ धर्म का पालन करते हुए आप ही अपनी जिम्मेदारी तय करें कार्य का निर्धारण करे और संकल्प करे कि बदलेगी बदलेगी निश्चय दुनियाँ बदलेगी, कल नहीं ये आज ही दुनियाँ बदलेगी। ❋❋❋

शेष पेज 10 से आगे.....

सूरदास जी कहते है। कि हे मन। तू धैर्य क्यों धारण नही करता ? संवत् 2000 के बाद ऐसा योग आयेगा जब पूर्व पश्चिम, उत्तर व दक्षिण चारों दिशाओं में अकाल पड़ेगा। उस अकाल के समय बहुत प्राणी मरेंगें और सम्पूर्ण विश्व में लोग असमय में मृत्यु को प्राप्त होंगें। पुनः एक हजार वर्ष बीतने के बाद (यानी संवत् 3000 के बाद) सत्ययुग आयेगां तब धर्म की बेल लता बढ़ने लगेगी। उस समय पृथ्वी सोने के फूल जैसी फूलने लगेगी और सुख की दशा लौटेगी। सूरदास जी की यह घोषणा है– यह भगवान की लीला है, जो टालने से भी नही टलेगी।

उपरोक्त पद में संवत् का आशय निश्चित ही सूरदास जी की दिव्य दृष्टि में विक्रमादित्य संवत् ही है। कारण सूरदास जी भी इसी संवत् की सोलहवी विक्रमी में जीवन यापन कर रहे थे। संवत् दो हजार के ऊपर कहकर उन्होने किसी एक दिन, एक मास अथवा एक वर्ष की ओर संकेत नहीं किया है। अपितु उनकी दृष्टि में विक्रमी संवत् 2000 से 3000 के मध्य नाना प्रकार के उपद्रव अमंगल एंव कलियुग का प्रभाव चरम सीमा पर घटित होना प्रारम्भ होगा। अधर्म की वृद्धि, धर्म की हानि, सर्वत्र आतंक, प्राकृतिक उत्पात, जनसंख्या में वृद्धि, महामारी, पृथ्वी की आकुलता भूकम्प, विस्फोट, सूखा, अकाल मृत्यु आदि के कारण सर्वत्र त्राहि त्राहि की स्थिति बन जायेगी। केवल धर्मात्मा, पुण्यात्मा तथा हरि भक्त ही शेष बचे रहेगे और यह स्थिति लगभग 1000 वर्ष तक चलेगी। पुनः परिस्थिति में परिवर्तन होगा और विक्रमी सम्वत् 3000 के बाद कलियुग में ही सत्ययुग अवान्तर रूप से प्रवेश करेगा तथा हरिकृपा से धर्म की वृद्धि होगी। अपने पुण्यों के प्रताप से बची हुई प्रजा सुखी हो जायेगी। वातावरण निर्मल होगा। चारो और सुख, शान्ति एंव समृद्धि की वृद्धि होगी।

महात्मा सूरदास जी ने अपने उपरोक्त पद के माध्यम से पुराणों एंव ज्योतिषशास्त्र में वर्णित युगों के विचरण सम्बन्धी प्राकृतिक नियमों को मन्याता देते हुए, भविष्य वाणी की है कि कलियुग के 5000 वर्ष बीतने के बाद अर्थात् विक्रमी संवत् 2000 के बाद 1000 वर्ष तक कलियुग अपने बीमत्स रूप में प्रकट होगा। ईश्वर की शरणागति ही, कलि प्रभाव से बचा सकती है।

वर्तमान में विक्रमी संवत् 2071, श्री कृष्ण संवत् 5240, भारतीय शाके सम्वत् 1936 तथा सन् 2015 ई. चल रहा है।

❋❋❋

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

शेष पेज 9 से आगे .....

5. विवाह व शिक्षा में बाधाओं के साथ वैवाहिक जीवन अस्थिर सा बना रहता है।

6. वंश वृद्धि में अवरोध दिखायी पड़ते है। काफी प्रयास के बाद भी पुत्र/पुत्री का सुख नहीं होगा।

7. गर्भपात की स्थिति पैदा होती है।

8. आत्मबल में कमी रहती है। स्वंय निर्णय लेने में परेशानी होती है। वस्तुतः लोगों से अधिक सलाह लेनी पड़ती है।

9. परीक्षा एंव साक्षात्कार में असफलता मिलती है।

राहु के मुख्य लक्षण प्रभाव– पेट के रोग, दिमागी रोग, पागलपन, खाजखुजली, भूत–चुडैल का शरीर में प्रवेश, बिना बात के ही झूमना, नशे की आदत लगना, गलत स्त्रियों या पुरूषों के साथ सम्बन्ध बनाकर विभिन्न प्रकार के रोग लगा लेना, शराब और शबाब के चक्कर में अपने को बरबाद कर लेना, लगातार टीवी और मनोंरजन के साधनों में अपना मन लगाकर बैठना, होरर शो देखने की आदत होना, भूत प्रेत और रूहानी ताकतों के लिये जादू या शमशानी काम करना, नेट पर बैठ कर बेकार की स्त्रियों और पुरूषों के साथ चैटिंग करना और दिमाग खराब करते रहना, कृत्रिम साधनों से अपने शरीर के सूर्य यानी वीर्य को झाडते रहना, शरीर के अन्दर अति कामुकता के चलते लगातार यौन सम्बन्धों से अपने शरीर के सूर्य यानी वीर्य को झाडते रहना, शरीर के अन्दर अति कामुकता के चलते लगातार यौन सम्बन्धों को बनाते रहना और बाद में वीर्य के समाप्त होने पर या स्त्रियों में रज के खत्म होने पर टीबी तपेदिक फेफडों की बीमारियां लगाकर जीवन को खत्म करने के उपाय करना, शरीर की नशें काटकर उनसे खून निकाल कर अपने खून रूपी मंगल को समाप्त कर जीवन को समाप्त करना, ड्रग लेने की आदत डाल लेना, नींद नहीं आना, शरीर में चींटियों के रेंगने का अहसास होना, गाली देने की आदत पड जाना, सडक पर गाडी आदि चलाते वक्त अपना पौरूष दिखाना या कलाबाजी दिखाने के चक्कर में शरीर को तोड लेना, बाजी नामक रोग लगा लेना, जैसे गाडीबाजी, आदि, इन रोगों के अन्य रोग भी राहु के है, जैसे कि किसी दूसरे के मामले में अपने को दाखिल करने के बाद दो लोगों को आपस में लडाकर दूर बैठ कर तमाशा देखना, लोगों को क्लिप बनाकर लूटने की क्रिया करना और इन कामों के द्वारा जनता का जीवन बिना किसी हथियार के बरबाद करना भी है। अगर उपरोक्त प्रकार के भाव मिलते है, तो समझना चाहिये कि किसी न किसी प्रकार से राहु का प्रकोप शरीर पर है, या तो गोचर से राहु अपनी शक्ति देकर मनुष्य जीवन को जानवर की गति प्रदान कर रहा है, अथवा राहु की दशा चल रही है, और पुराने पूर्वजों की गल्तियों के कारण जातक को इस प्रकार से उनके पाप भुगतने के लिये राहु प्रयोग कर रहा है।

राहु से प्रभावित ग्रस्त मनुष्य के लक्षण के कारण

लग्न में राहु तथा चंद्र और त्रिकोण में मंगल व शनि हो तो जातक को प्रेत प्रदत्त पीडा होती है।

चंद्र पाप ग्रह से दृष्ट हो शनि सप्तम में हो तथा कोई शुभ ग्रह चर राशि में हो तो, भूत से पीडा होती है।

शनि तथा राहु लग्न में हो, तो जातक को भूत सताता है।

लग्नेश या चंद्र से युक्त राहु लग्न में हो, तो प्रेत योग होता है।

यदि दशम भाव का स्वामी आठवें या एकादश भाव में हो और संबंधित भाव के स्वामी से दृष्ट हो तो उस स्थिति में भी प्रेत योग होता है।

1. नीच राशि में स्थित राहु के साथ लग्नेश हो तथा सूर्य शनि व अष्टमेश से दृष्ट हो।

2. पंचम भाव में सूर्य तथा शनि हो, निर्बल चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तथा बृहस्पति बारहबें भाव में हो

3. जन्म समय चन्द्रग्रहण हो और लग्न, पंचम तथा नवम भाव में पाप ग्रह हो तो जन्मकाल से ही पिशाच बाधा का भय होता है।

4. षष्ठ भाव में पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट राहु तथा केतु की स्थिति भी पैशाचिक वाधा उत्पन्न करती है।

5. लग्न में शनि, राहु की युति हो अथवा दोनों में से कोई भी एक ग्रह स्थिति हो अथवा लग्नस्थ राहु पर शनि की दृष्टि हो।

6. लग्नस्थ केतु पर कई पाप ग्रहों की दृष्टि हो।

7. निर्बल चन्द्रमा षष्ठ अथवा बाहरबें में मंगल राहु या केतु के साथ हो तो भी पिशाच भय।

8. निर्बल चन्द्रमा शनि के साथ अष्टम में हो तो पिशाच, भूत प्रेत मशान आदि का भय।

9. चर राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) के लग्न पर यदि षष्ठेश की दृष्टि हो।

10. एकादश भाव में मंगल हो तथा नवम भाव में स्थिर राशी (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ) और सप्तम भाव में द्विस्वभाव राशि (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) हो।

11. लग्न भाव मंगल से दृष्ट हो तथा षष्ठेश, दशम, सप्तम या लग्न भाव में स्थिति हो।

12. मंगल यदि लग्नेश के साथ केंद्र या लग्न भाव में स्थिति हो तथा छठे भाव का स्वामी लग्नस्थे हो।

13. पापग्रहों से युक्त या दृष्ट केतु लग्नगत हो।

14. शनि राहु केतु या मंगल में से कोई भी एक ग्रह सप्तम स्थान में हो।

15. जब लग्न में चन्द्रमा के साथ राहु हो और त्रिकोण भावों में क्रूर ग्रह हो।

16. अष्टम भाव में शनि के साथ निर्बल चन्द्रमा स्थित हो।

17. राहु शनि से युक्त होकर लग्न में स्थित हो।

18. लग्नेश एंव राहु अपनी नीच राशि का होकर अष्टम भाव या अष्टमेश से संबंध करें।

19. राहु नीच राशि का होकर अष्टम भाव में हो तथा लग्नेश शनि के साथ द्वादश भाव में स्थित हो।

20. द्वितीय में राहु, द्वादश में शनि, षष्ठ में चन्द्र तथा लग्नेश भी अशुभ भावों में हो।

21. चन्द्रमा तथा राहु दोनो ही नीच राशि के होकर अष्टम भाव में हो।

22. चतुर्थ भाव में उच्च का राहु हो वक्री मंगल दवादश भाव में हो तथा अमावस्या तिथि का जन्म हो।

23. नीचस्थ सूर्य के साथ केतु हो तथा उस पर शनि की दृष्टि हो तथा लग्नेश भी नीच राशि का हो।

24. शारीरिक सुचिता के साथ साथ मानसिक पवित्रता का भी ध्यान रखें।

25. नित्य हनुमान चालीसा तथा बजरंग बाण का पाठ करें।

26. पुखराज रत्न से प्रेतात्माएं दूर भागती है। अतः पुखराज रत्न धारण करें एवं घर में नित्य शंख बजाएं।

28. मंगलवार को व्रत रखें तथा सुंदरकाण्ड का पाठ करें।

29. नित्य गायत्री मंत्र की एक माला का जाप करें।❋❋❋

शेष पेज 8 से आगे.....

विशेष रूप से कन्याओं को प्रसन्न करें। अगर आप घर पर हवन कर रहे है तो उनके नन्हे नन्हे हाथों से हवन सामग्री अग्नि में अवश्य डलवांए। उन्हे इलायची, पान, हलवा, खीर पूरी या जलेबी/मिठाई का सेवन कराकर उन्हें दक्षिणा अवश्य ही दें। यदि संभव हो सके तो अंत में जाते समय उन्हें कोई न कोई बर्तन और एक एक चुनरी देकर घर से बेटी की तरह विदा करें और हाँ उन्हे विदा करते समय उनके चरण छूकर उनका आर्शीवाद ग्रहण करना कतई न भूलें।

इन उपरोक्त रीतियों के अनुसार माता की पूजा अर्चना करने से देवी मां प्रसन्न होकर हमें सुख, सौभाग्य, यश, कीर्ति, धन और अतुल वैभव का वरदान देती है।

नवरात्र के कुछ खास उपाय : नवरात्र के पर्व का हिन्दु धर्म में एक बहुत ही विशेष स्थान है। नवरात्रि का पर्व हर्ष उल्लास और अपने सभी सपनों को पूर्ण करने व माता आदि शक्ति की कृपा पाने का पर्व है। इस पर्व को उसी तरह से पूर्ण श्रद्धा एंव प्रसन्नता से मनाएं जिस तरह से विवाह आदि मांगलिक कार्यो में आप सक्रीय रहते है। इन शक्ति के दिनों आप कुछ बातों का ध्यान रखते हुए अपने जीवन के सभी संकटो को दूर करके अपना जीवन असीम आनंद से भर सकते है। इन दिनों यदि आप नवरात्र के सभी व्रत न भी रख पायें तो भी कम से कम पहला और आखिरी व्रत अवश्य ही रखें और प्याज, लहसुन, मांस, मदिरा, बीडी, सिगरेट, तंबाकू और पान मसाले आदि व्यसनों का बिल्कुल भी प्रयोग न करें। इन दिनों यह विशेष ध्यान दें कि आप क्रोध बिल्कुल भी न करें और घर में भूल कर भी कलह– कलेश न हो, जिस घर मे कलह होती है वहां पर माता को आप कैसे बुला सकते है। जिस भी घर में नवरात्रि को श्री सूक्त का पाठ प्रतिदिन होता है। उस घर में कभी भी आर्थिक संकट नही आता है। यदि किसी व्यक्ति के जीवन में बहुत परेशानी, अस्थिरता रहती है तो वह या उसकी पत्नी नवरात्रि में दुर्गा सप्तशती का प्रतिदिन सम्पूर्ण अथवा एक या एक से अधिक पाठ करके माता की कपूर और लौंग से आरती करें तो उसके सभी संकट कटने लगते है। यदि आप या आपके घर में दुर्गा सप्तशती का पाठ कोई भी नहीं कर पा रहा है तो आप किसी योग्य ब्राह्मण से भी इसका पाठ करवा सकते है। नवरात्रि में पूजा के समय प्रतिदिन माता को शहद एंव इत्र चढ़ाना कतई भी न भूले। नौ दिन के बाद जो भी शहद और इत्र बच जाये उसे प्रतिदिन माता का स्मरण करते हुए खुद इस्तेमाल करें। मां की आप पर सदैव कृपा दृष्टि बनी रहेगी। पहले नवरात्र में एक लाल कपड़े में ग्यारह कौडियाँ और तीन गोमती चक्र रख कर माता के पूजन के साथ उस पर हल्दी से तिलक करके उसे पूजा घर में रख दें। नवमी को हवन करने व कन्याओं का पूजन करने के बाद इन्हें उसी लाल कपड़े में बांधकर घर की रसोई में ऊंचाई पर बाँध दें। आपके घर पर सदैव माँ लक्ष्मी का बास रहेगा। नवरात्र में माता दुर्गाजी को शहद का भोग लगाने से भक्तों को सुंदर रूप प्राप्त होता है। व्यक्तित्व में तेज प्रकट होता है। नवरात्रि को मां दुर्गा के साथ बजरंग बली की पूजा विशेष फलदायी है। इस दिन जो भी भक्त हनुमान चालीसा का पाठ करता है या सुंदरकांड का पाठ करता है तो उसे शनिदेव भी नहीं सताते है। नवरात्रि के प्रत्येक मंगलवार, शनिवार को बजरंग बली को सिंदूर और चमेली का तेल अवश्य ही अर्पित करें। नवरात्र के शनिवार को सूर्योदय के पहले पीपल के ग्यारह पत्तें लेकर उन पर राम नाम लिख कर इन पत्तों की माला बनाकर इसे हनुमानजी को पहना दे। इससे कारोबार की सभी परेशानियां दूर होती है, यह प्रयोग बिलकुल चुपचाप करें। नवरात्रि में दिल खोलकर आप अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार दान पुण्य करें। इन दिनों आपके द्वारा दान पुण्य करने से उसका अक्षय फल प्राप्त होता है। आप प्रतिदिन छोटी कन्याओं को कोई न कोई उपहार अवश्य ही दें। अपने माता पिता बहन भाई और पत्नी को भी कोई न कोई उपहार देकर चकित जरूर करते रहें, गरीब और असहाय की मदद करने का मौका तो बिल्कुल भी न गवांए। यकीन मानियें उन सभी के सुख से आपके लिए शुभ वचन निकलते ही रहेंगें। आपने माता का आवाहन किया है उन्हें अपने घर में बुलाया है इसलिये सुबह शाम जो भी घर में भोजन बनायें सबसे पहले उसका देवी माँ को भोग लगाए उसके बाद ही घर के सदस्य उसका सेवन करें। याद रहे माता या किसी भी मेहमान को भूखा न रखें। नवरात्र मे आप अनावश्यक व्यय से बचें लेकिन यदि संभव हो तो इन दिनों सोने चाँदी के गहने,कपड़े, बर्तन आदि कुछ न कुछ नया सामान अपनी सामर्थ्य के अनुसार अवश्य ही खरीदें तथा इसे उपयोग में लाने से पहलें माता के चरणों में लगायें। इससे घर में सुख सौभाग्य आता है। स्थाई संपत्ति का वास होता है। घर के छोटे बच्चों विद्यार्थियों से माता दुर्गा को केले का भोग लगवाएं फिर उनमें से कुछ केले दान में दे दें एंव बाकी केलो को प्रसाद के रूप में घर के लोग ग्रहण करें इससे बच्चों की बुद्धि का विकास होता है। नवरात्र में प्रातः श्री राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने से हर कार्य सफल होता है। कार्यो के मार्ग में आने वाली समस्त विध्न बाधाएं शांत होती है। नवरात्र में दो जमुनिया रत्न लेकर उसे गंगा जल में डुबोकर घर के मंदिर में रखें फिर हर शनिवार को माता दुर्गा का स्मरण करते हुए उस जल को पूरे घर में छिडक दें, घर के सदस्यों के बीच में प्रेम बढने लगेगा। उसके बाद पुनः इन रत्नों को गंगा जल में डुबोकर मंदिर में रख दें। इस प्रयोग को नवरात्र से ही शुरू करें तो अति उत्तम है। नवरात्र में एक नए झाड़ू की दो सीकों को उल्टा सीधा रखकर नीले धागे से बांधकर घर के नैऋत्य कोण में रखने से पति पत्नी के मध्य प्यार बड़ता है। पहले नवरात्र को शनिवार के दिन शिवलिंग पर काले तिल और जल चढांए यह उपाय बीमारियों से मुक्ति दिलाने वाला बहुत सरल और कारगर उपाय है। नवरात्र में आप किसी को भी यथा संभव उधार देने से बचे और उधार भी तो बिल्कुल भी न लें। यदि रहिये आप माता की आराधना सुख सम्पन्नता और सफलता के लिए कर रहे है इसलिए आप किसी भी दशा में किसी का एक भी पैसा न हडपे किसी के भी साथ धोखा ना करें माता की सच्ची आराधना आपको आर्थिक रूप से अवश्य ही सक्षम बनाएगी। ❋❋❋

मेवाड़ विश्वविद्यालय व **अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ**

के संयुक्त तत्वाधान में

ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समीति, आगरा

के अंतर्गत करें

4 वर्षीय इंटिग्रेटेड पोस्ट ग्रेजुएशन एवं पीएच. डी.

आवश्यक शैक्षणिक योग्यता - स्नातक (ग्रेजुएशन)

अथवा स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएशन)

देय राशि	₹ 75000/- प्रति वर्ष
विवरण पत्रिका	₹ 500/-
प्रवेश परीक्षा शुल्क	₹ 1000/-

भविष्य दर्शन® ज्योतिष एवं वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। मो. 9557775262, 9719666777

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262